पी. एण्ड एस. बैंक राजभाषा

अंकुर

मार्च 2015

पी.एस.बी

प्रधानमंत्री जन-धन योजना

₹

मेरा खाता भाग्य विधाता

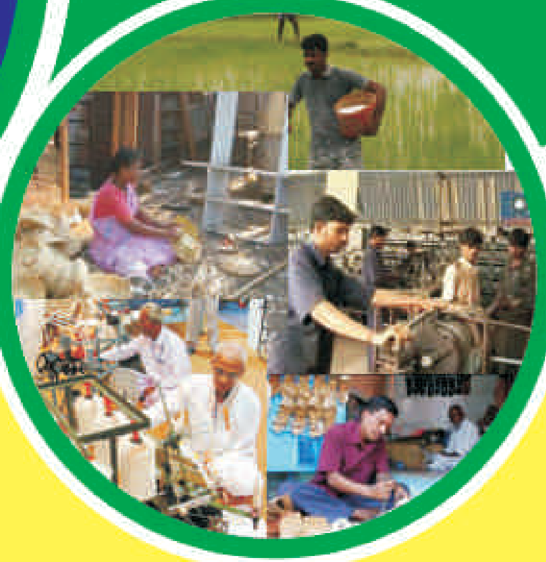

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

੧ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ ॥

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ
Punjab & Sind Bank

(राजभाषा विभाग)

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी पुणे में 'ज्ञान संगम' कार्यक्रम के दौरान सभी बैंकों के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशकों के साथ। चित्र में दायीं ओर हमारे बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिंदरबीर सिंह (आई.ए.एस.) दिखाई दे रहे हैं।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

'बैंक हाऊस', प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110 125

मार्च, 2015

मुख्य संरक्षक

श्री जतिन्दरबीर सिंह, *आई.ए.एस.*

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री एम. के. जैन

कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री दीन दयाल शर्मा

महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक व प्रकाशक

श्री राजिंदर सिंह बेवली

मुख्य प्रबंधक

प्रभारी, राजभाषा

संपादक मंडल

श्री कुलदीप सिंह खुराना

वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा

श्री त्रिलोचन सिंह, डॉ. नीरू पाठक

प्रबंधक

श्री सोनी कुमार

राजभाषा अधिकारी

पंजीकरण सं. : एफ. 2(25) प्रैस. 91

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : मोहन प्रिंटिंग प्रेस

5/35ए, कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110015

फोन : 98100 87743

विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल / विषय-सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	बोलचाल की हिंदी कामकाजी हिंदी	4-5
5.	ऋतुरात बसंत	6
6.	गतिविधियाँ	7
7.	हिंदी में अन्य भाषों के शब्दों का प्रचलन आशीर्वाद है	8-9
8.	ज़िंदग एक जंग	9
9.	परवरिश	10-11
10.	फील्ड महाप्रबंधक का कोलकाता दौरा	12
11.	ये दौलत भी ले लो, ...	13-17
12.	प्रशासक नहीं, प्रिय शासक	18
13.	मस्तिष्क मंथन आयोजन	19
14.	स्वामी विवेकानन्द - उद्धरण	20
15.	अ. एवं प्र. नि. का कोलकाता दौरा	21
16.	पंजाबी कार्यशाला	22
17.	हिंदी कार्यशाला	23
18.	गतिविधियाँ	24
19.	प्रतीक चिह्न और उनका महत्व	25-27
20.	बैंकिंग ऑम्बड्समेन (लोकपाल)	28-29
21.	अधिकारी बाबू	30
22.	प्रशिक्षण कार्यक्रम	31
23.	काव्य-मंजूषा	32-33
24.	बेटी बचाओ	34-35
25.	ग्राहक सेवा एवं बैंकिंग कोड	36-37
26.	ज़रा सोचिए	37
27.	पीएसबी स्वरोज़गार प्रशिक्षण संस्थान.....	38
28.	गतिविधियाँ	39
29.	वृद्धावस्था	40-41
30.	महिलाएं एवं बैंक	42-43
31.	ग्राहक एवं व्यवहार	44

आपकी कलम से

आप के द्वारा संपादित बैंक की त्रैमासिक गृह पत्रिका राजभाषा अंकुर प्राप्त हुई यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष की बात है कि इस वर्ष राजभाषा हिंदी ने क्षेत्र ''ख'' में दो कीर्तिमान स्थापित किए और उन उपलब्धियों की झलक पत्रिका के प्रथम व अंतिम दोनों पृष्ठों पर दिखी, आपके द्वारा लिखित ''ग्राहक सेवा और विपणन'' लेख में ग्राहक सेवा से जुड़ी छोटी-छोटी बातों ने हमारे बैंक की पंचलाइनों का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया, न केवल हिंदी अपितु बैंक द्वारा सम्पन्न हुई सभी सामाजिक व आंतरिक गतिविधियों का चित्रों के माध्यम से प्रस्तुतीकरण सराहनीय है, काव्य-मंजूषा में छोटी-छोटी पंक्तियों में सार गर्भित विचारों का चित्रण भी अपने आप में सराहनीय है। पुनः आपको पत्रिका के सरल व उत्कृष्ट सम्पादन की शुभकामनाएं। अंत में दो पंक्तियाँ हिंदी भाषा को समर्पित है।

हिंदी भाषा माधुर्य है,
अतः यह मिष्ठ है।
हिंदी भाषा उच्च है,
अतः यह उत्कृष्ट है।
हिंदी भाषा सरल है,
अतः यह श्रेष्ठ है।

(सी. पी. वालिया)
आंचलिक प्रबंधक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक,
लखनऊ-226001

राजभाषा अंकुर का ''ग्राहक सेवा विशेषांक'' प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम बैंक को राजभाषा शील्ड प्राप्त होने पर आपको हार्दिक बधाई। पत्रिका में सभी लेख ग्राहक सेवा पर उत्कृष्ट रचनाएं हैं परंतु राजिंदर सिंह बेवली का आलेख ''ग्राहक संबंध : कुछ ऐसे भी....'' व्यवहारिक प्रयोग है जिन्हें अपनाकर हम अपने ग्राहकों के साथ सार्थक संवाद स्थापित कर सकते हैं। श्री बेवली ने बहुत ही सुंदर तरीके से अपनी बात रखी हैं एवं सुझाव दिए हैं। उनके एनएलपी मॉडल के सिद्धांत काफी व्यवहारिक है, उदाहरणार्थ ग्राहक को यदि यह कहना है कि 'लगता है आप समझे नहीं' तो उसे इस तरीके से बोला जाए कि 'लगता है मैं आपको अपनी बात समझा नहीं पा रहा हूँ' यह एक सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। इसके साथ काव्य-मंजूषा में परविंदर कौर की क्षणिकाएं अपने गूढ़ अर्थों के साथ मन को छू गई। बहुत बधाई। अंकुर में इस प्रकार की रचनाएं ज्ञानवर्धन, रोचकता का कार्य करती है जिससे पत्रिका और मनोरंजकता का आभास देती है। पत्रिका का कलेवर सदैव की भाँति मनभावन है।

(ए. के. सिन्हा)
आंचलिक प्रबंधक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक
कोलकाता-700001

राजभाषा पत्रिका 'अंकुर' का ग्राहक सेवा विशेषांक अक्टूबर-दिसंबर 2014 प्राप्त हुआ। संपादकीय लेख में बैंक के स्लोगन के साथ, ग्राहक सेवा व भाषा का सामंजस्य सटीक एवं कलात्मक है। पत्रिका का आवरण-पृष्ठ मशीनीकरण के सन्दर्भ में ग्राहक सेवा को परिलक्षित करता है। लेख 'ग्राहक सेवा का बदलता स्वरूप' न केवल महत्वपूर्ण है बल्कि ज्ञानवर्धक भी है। विभिन्न छायाचित्र बैंक के गतिविधियों व विशिष्ट उपलब्धियों को अभिव्यक्त करने के साथ कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने वाले हैं। कार्टूनों के अभिनव प्रयोग से कतिपय लेख रोचक व आकर्षक बन पड़े हैं। कविता 'प्यार का इंतजार' मर्मस्पर्शी है। आशा है कि बैंक कर्मचारी पत्रिका में प्रकाशित ग्राहक सेवा संबंधी लेखों के मूल भाव को अपने कार्यालयीन संव्यवहार में उतारकर बैंक की व्यवसायिक वृद्धि में अपनी सशक्त भूमिका का निर्वाह करेंगे। पत्रिका के पृष्ठ-सज्जा से लेकर उत्कृष्ट लेखों के चयन के लिए संपादक मंडल निश्चित तौर पर बधाई के पात्र हैं। इसी आशा और अपेक्षा के साथ कि भविष्य में इस तरह के विशेषांकों को पढ़ने का सौभाग्य मिलता रहेगा।

(डी. एस. ग्रोवर)
आंचलिक प्रबंधक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक, भोपाल

पी. एण्ड एस. बैंक राजभाषा ''अंकुर'' के अक्तूबर-दिसम्बर, 2014 का अवलोकन किया। आपका यह नवीन प्रयास अत्यंत सराहनीय रहा और पत्रिका ने मन मोह लिया है। पत्रिका में प्रकाशित लेख, विशेषतया ''ग्राहक सेवा का बदलता स्वरूप'', ''ग्राहक सेवा-करणीय-अकरणीय'', ''ग्राहक सेवा में भाषा का महत्व'' तथा ''बदलते परिवेश में बैंकिंग का योगदान'' अत्यंत ज्ञानवर्धक हैं। मैं इस विशिष्ट कार्य के लिए संपादक मंडल को अपनी शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूँ और साथ ही आशा करता हूँ कि भविष्य में भी बैंक से जुड़ी इस तरह की विशेष जानकारियों से कर्मियों को पत्रिका के माध्यम से परिचित कराते रहेंगे। पी. एण्ड एस. बैंक राजभाषा ''अंकुर'' सुनहरे कल की ओर अग्रसर हो, ऐसी हमारी शुभकामनाएं हैं।

(नेत्रानन्द सेठी)
आंचलिक प्रबंधक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक
देहरादून-248002

आपके बैंक द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका अंकुर का 'ग्राहक सेवा विशेषांक' प्राप्त हुआ। धन्यवाद। ऐसी सुंदर पत्रिका के प्रकाशन के लिए आप और पूरा संपादक मंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका का कलेवर आकर्षक है और ग्राहक सेवा जैसा महत्वपूर्ण विषय केन्द्र में रखा गया है। वस्तुतः ग्राहक सेवा ही सम्पूर्ण बैंकिंग का मेरुदंड है। इससे संबद्ध सभी पहलुओं का बड़ी गहराई से विश्लेषण किया गया है और इसमें दी गई जानकारी बहुत उपयोगी और सटीक है। जीवन से संबंधित अन्य विषयों पर लेख और कुछ सुंदर कविताएं पत्रिका को विविधता प्रदान करती हैं। साथ ही, राजभाषा से संबंधित गतिविधियाँ बैंक द्वारा राजभाषा के संबंध में किए जा रहे विभिन्न प्रयासों को दर्शाती है। पत्रिका की सफलता हेतु शुभकामनाओं सहित।

(उषा किरण)
उप महाप्रबंधक
आईडीबीआई बैंक लिमिटेड
रेड क्रॉस मार्ग, नई दिल्ली-110001

केवल वही व्यक्ति सच्चा एहसान कर सकता है जो एहसान करके भूल चुका हो।

संपादकीय

बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर के मुख्य संपादक का दायित्व सौंपे जाने एवं इसके माध्यम से सभी सुधी पाठकों से रू-ब-रू होकर उनके विचार जानने तथा कुछ अपने दिल की बात कहने का सुअवसर पाकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

आपके समक्ष जब यह अंक आएगा, भारतीय पद्धति के अनुसार नववर्ष का शुभागमन हो चुका होगा, सर्द हवाओं का मौसम बीत चुका होगा और बसंत की भीनी-भीनी बयार के साथ वातावरण रंग-बिरंगे फूलों की महक से ओत-प्रोत हो रहा होगा। सरसों के फूलों से भरे पीले खेत, आम के पेड़ों पर बौर एवं कोयल की मीठी कूक हृदय में नया जोश भर रही है तथा यह संदेश भी दे रही है कि हम सब अपने अथक प्रयासों से अपने बैंक को इस प्रतिस्पर्धात्मक दौर में नई ऊँचाईयों तक पहुँचाएं। इसमें राजभाषा विभाग भी ''अंकुर'' के माध्यम से अपनी सार्थक भूमिक का निर्वाह करने के लिए तत्पर है।

हाल ही में प्रधान कार्यालय के कुछ साथियों ने विभिन्न अंतर्बैंक प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त किए हैं, जिससे न केवल उन्हें राजभाषा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त हुई है बल्कि बैंक को भी राजभाषा के कार्यान्वयन के क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त हुई है। मेरी ओर से सभी विजेताओं को बधाई और इस अंक के माध्यम से मैं प्रधान कार्यालय के अन्य सभी कार्मिकों से भी अपेक्षा करता हूं कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर सहभागिता करें तथा सफलता प्राप्त करें।

प्रस्तुत अंक में विभिन्न लेखों, कहानियों, कविताओं तथा चित्रों के माध्यम से बैंकिंग तथा राजभाषा हिंदी के अनेक पहलुओं को स्पर्श किया गया है जिनमें ''हिंदी में अन्य भाषाओं के शब्दों....., ''बोलचाल की हिंदी''.... तथा ''महिलाएं तथा बैंक'' विशेषकर पठनीय हैं, किंतु इसके साथ ही ''ये दौलत भी...., ''ऋतुराज बसंत'', ''बेटी बचाओ'' जैसे लेख भी हैं जिनमें जीवन में, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा नैतिक आवश्यकताओं पर बल दिया गया है। ''प्रतीक चिह्न और उनका महत्व'', लेख ज्ञानवर्धक होने के साथ रुचिकर भी है। इस अंक से पत्रिका में हम 'जरा सोचिए'' नामक शीर्षक से एक नया स्तंभ शुरू कर रहे हैं। इस स्तंभ का मूल उद्देश्य व्यक्तित्व विकास है, जिसमें व्यवहार कौशल, मानवता तथा सकारात्मक सोच के विभिन्न अनुभवों को पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास है। आप इस पत्रिका के इस स्तंभ को भी अवश्य पढ़ें और अपने इस प्रकार के अनुभवों को कलमबद्ध कर हमें प्रेषित कर पाठकों के साथ बाँटें ताकि हम समाज को अपने व्यक्तित्व का और अधिक लाभ पहुँचा सकें। हमें आपके विचारों की प्रतीक्षा रहेगी।

आशा है पत्रिका आपको पसंद आएगी। पत्रिका के बारे में आप अपनी राय हमें अवश्य भेजें ताकि हम इस पत्रिका को पाठकों की रुचि तथा आवश्यकतानुसार ढाल सकें।

दीन दयाल शर्मा

(दीन दयाल शर्मा)
महाप्रबंधक (राजभाषा)

बोलचाल की हिंदी कामकाजी हिंदी

रीटा भट्टाचार्य

भारतीय संविधान के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी संघ की राजभाषा है। जो राजभाषा के साथ-साथ जनभाषा, संपर्क भाषा, जन-जन की आम बोल चाल की भाषा है। सरकार के निर्देश भी इस विषय में बड़े स्पष्ट हैं कि सरकारी प्रयोजन में आम जनता द्वारा बोली जाने वाली हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाएगा।

आम जनता अंग्रेज़ी भाषा न तो बोल सकती है और न ही समझ सकती है। हिंदी एक सशक्त जनभाषा है जो हज़ारों-हज़ार साल से इस देश में बोली और समझी जाती है। अंतिम हिंदू सम्राट पृथ्वीराज चौहान की पराजय के बाद से दिल्ली की गद्दी पर मुस्लिम शासकों का अधिकार रहा। अंतिम मुगल सम्राट अबू जफ़र मुहम्मद सराजुद्दीन बहादुर शाह जफ़र गाजी के पतन के बाद अंग्रेजों का पूर्ण अधिकार हुआ और यह शासन 1947 में समाप्त हुआ। इतने सालों के बीच भी हिंदी भारतीयों के दिलों की धड़कन बनी रही।

इस आम बोलचाल की हिंदी भाषा में सभी भाषाओं को समान आदर सहित अपने में समाहित करने की अपार क्षमता है। इस क्षमता के बल पर यह भाषा सारे भारत में बोली और समझी जाती है। तथा विज्ञापन की दुनिया में भी सिरमौर बनी हुई है। दुनियां की किसी भी भाषा के शब्द इस भाषा में समा जाते हैं। यह भाषा दुनिया की किसी भी भाषा से अधिक वैज्ञानिक है। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी के शब्दों में - "हिंदी सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा है तथा देवनागरी सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। इसकी विशेषता है कि आप जैसा उच्चारण करें वैसा ही लिखें।"

इन्हीं सब क्षमताओं के बल पर विभिन्न मुस्लिम शासकों के शासनकाल में अरबी और फारसी का बोलबाला होने तथा उन भाषाओं को सत्ता का संरक्षण मिलने के बावजूद भी यह भाषा अक्षुण्ण बनी रही तथा अंग्रेजों के शासनकाल में अंग्रेजी के प्रमुख के बावजूद भी यह भाषा जन-मानस की भाषा, बोलचाल की भाषा बनी रही। अंततः स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को संघ सरकार की राजभाषा बनाया गया। इस प्रकार यह आम बोलचाल की भाषा होने के साथ-साथ कामकाज की भाषा भी बन गई।

कामकाजी भाषा के रूप में यह हिंदी बिंदास यानि बंधनों से मुक्त और अंग्रेजी उर्दू शब्दों से युक्त है। यह भाषिक शुद्धता अथवा व्याकरण की कैद से निकली आजाद हिंदी है। आरंभ में थोड़े से विरोध के बावजूद यह रूप सबको अच्छा लगने लगा है। इसे आज़ादी के पहले की हिन्दुस्तानी जुबान का ही नया संस्करण कहा जा सकता है। जिसमें अब एक हिस्से के रूप में अंग्रेजी भी जुड़ गई है। हिंदी के इस बोलचाल के रूप में एक सहज आकर्षण दिखाई देता है जो नई तथा पुरानी दोनों पीढ़ियों को एक साथ अपनी ओर खींचता है। उस बोलचाल की हिंदी ने भाषा के नज़रिए से हिंदी-अहिंदी का भेद काफी हद तक कम कर दिया है। हिंदी का यह स्वरूप अब सभी को सहज स्वीकार्य है। हिंदी के इस स्वरूप ने हिंदी को पारंपरिक स्वरूप से निकाल कर बोलचाल की ग्लोबल भाषा के रूप में एक नई पहचान दी है। बोलचाल की हिंदी के इस रूप में ताज़गी के साथ-साथ आधुनिकता का पुट भी उजागर होता है। इसमें फिल्मों की लोकप्रियता का भी अपना योगदान मानना पड़ता है।

फलतः दिल्ली या उत्तरी भारत के अन्य हिस्सों की हिंदी हो या मुंबइया हिंदी, लखनवी हिंदी, दक्खिनी हिंदी या फिर अंग्रेजी दां हिंदी, सभी आज स्वतः सतत् प्रवाह में आ मिली है। सारांशतः कहें तो इस नई हिंदी में कुछ तो ऐसी बात है जो एक तरफ आम जनता को अपील करती है तो दूसरी तरफ बाज़ार को भी आसानी से लुभाती है।

हिंदी पर लगे तथाकथित पिछड़ेपन के लेबल को भी हिंदी के इस नए रूप ने धो दिया है। यह स्थिति अब पूरे हिंदुस्तान में दिखाई दे रही है। खासकर आज की युवा-पीढ़ी जो हिंदी से छिटकने लगी थी। वह भी अब हिंदी में बातचीत और व्यवहार करने से नहीं कतराती। स्टेटस सिंबल बन चुकी अंग्रेज़ी को बोलचाल और लोक व्यवहार के क्षेत्र में हिंदी के इस नए स्वरूप ने कड़ी चुनौती दी है। अब लोगों का नज़रिया हिंदी की तरफ चौतरफा मुड़ चुका है।

1. समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और साहित्य में हिंदी।
2. रेडियो, टी.वी. और सिनेमा में हिंदी।
3. विज्ञापन एवं सूचनातंत्र में हिंदी और
4. बाज़ार एवं प्रशासन में हिंदी।

आज हिंदी के कामकाजी और व्यवसायिक प्रयोग की वास्तविक स्थिति को सभी स्वीकार करते हैं। लाभप्रदता एवं ग्राहक सेवा के बीच सीधा संबंध कामकाजी हिंदी ने जोड़ा है। हमारे कार्य व्यवसाय और योजनाओं की सफलता में कामकाजी हिंदी का बड़ा योगदान है।

हिंदी का सारे संसार में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में चीनी भाषा के बाद दूसरा स्थान है। बेल्जियम में पैदा हुए डॉ. कामिल बुल्के को अनन्य हिंदी प्रेमी के रूप में जाना जाता है, डॉ. बुल्के का कहना है हिंदी को राजकाज की नहीं काम काज की भाषा बनाना है। हिंदी केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्वभर में एक प्रमुख भाषा के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कर रही है विदेशों में भी अब हिंदी बोलने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।

हिंदी को जब राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया गया तब संविधान सभा के अध्यक्ष ने जो घोषणा की वह अति महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा - आज पहली बार हम अपने संविधान में एक भाषा स्वीकार कर रहे हैं जो भारत संघ के प्रशासन की भाषा होगी और इसे विकसित करना होगा। हमने अपने देश का राजनीतिक एकीकरण सम्पन्न किया है। राजभाषा हिंदी देश की एकता को कश्मीर से कन्याकुमारी तक अधिक सुदृढ़ बना सकेगी। अंग्रेजी की जगह भारतीय भाषाओं को स्थापित करने से हम निश्चय ही और भी एक दूसरे के नज़दीक आएंगे।

संविधान को देखें तो भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 से लागू हुआ। तभी से संविधान की धारा 343 के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनी तथा लिपि देवनागरी निश्चित हुई। संविधान की धारा 351 के अनुसार मुख्यतः संस्कृत भाषा से एवं गौणतः भारत की अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण किए जाएंगे।

कभी-कभी सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली भाषा के स्वरूप को लेकर भी प्रश्न उठने लगते हैं। इस संदर्भ में आवश्यकता इस बात की है कि कर्मचारियों का ध्यान बार-बार संविधान की धारा 351 में दिए गए निर्देश की ओर दिलाया जाए जहाँ एक तरफ सरकार की ओर

से इस विषय में लचीला रुख अपनाया गया है कि जहाँ आवश्यक हो सरकारी कामकाज में उर्दू, अंग्रेजी आदि के प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जाए वहीं दूसरी तरफ यह भी जरूरी है कि - हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में प्रचलित शब्दों के होते हुए भी अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग की लालसा से बचा जाए। अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग केवल तब किया जाना चाहिए जब कि उनके लिए कोई हिंदी अथवा भारतीय भाषा का शब्द उपलब्ध न हो जैसे बैंक, चेक, ड्राफ्ट, कंप्यूटर आदि लेकिन दूरभाष के लिए टेलीफोन, ट्रेन के लिए लोह पथ गामिनी, आकाशवाणी के लिए रेडियो स्टेशन जैसे शब्दों का व्यवहार अनुचित है। लेकिन अगर ऐसा स्वतःस्फूर्त और अनजान रूप से हो रहा हो तो अलग बात है, स्वतःस्फूर्त शब्द सामान्यतः अटपटे नहीं लगते।

बोलचाल के शब्दों का प्रयोग कामकाजी हिंदी को सरल बनाता है। क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग से बचते हुए सरल जाने-माने शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। हिंदी भाषा हिंदी की प्रकृति के अनुरूप ही लिखी जानी चाहिए। अंग्रेज़ी में सोचकर हिंदी में लिखना अनुवाद की भाषा कहलाता है जो कठिन होती है। भले ही टूटी-फूटी हिंदी में, आम बोल-चाल की हिंदी में सोचें लेकिन सोचें हिंदी में और तब लिखें हिंदी में। इस तरह से लिखी हिंदी सरल होगी और ऐसी हिंदी में बोला और लिखा दोनों ही अच्छा संप्रेषण होगा।

- सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

ऋतुराज-बसंत

डॉ. नीरू पाठक

ऋतुओं में ऋतु बसंत, भारत की छह ऋतुओं में से एक सर्व सुखदायिनी ऋतु है - बसंत। बसंत आगमन की अभिनन्दन तिथि बसंत पंचमी कहलाती है जो माघ मास की शुक्ल पंचमी को मनायी जाती है। जिसका प्राकृतिक, पौराणिक, धार्मिक एवं सामाजिक महत्व भी है। वैज्ञानिक तथ्यों के अनुसार, बसंत पंचमी के दिन सौर मंडल में पृथ्वी और सूर्य के बीच ऐसा मेग्नेटिक फील्ड बनता है जिसमें से अगर सूर्य की किरणें पीले रंग से होकर हमारे शरीर में जाएं तो वर्ष भर हमारा लीवर जिसे शरीर का पावर हाउस भी कहा जाता है, स्वस्थ रहेगा संभवत इसीलिए इस दिन लोग पीले रंग के वस्त्र धारण करते हैं।

फाल्गुन एवं चैत्र मास बसंत ऋतु के माने जाते हैं। शरद ऋतु जब अपनी पराकाष्ठा पर होती है तो मनुष्य और पशु-पक्षियों के साथ पेड़-पौधे भी कष्टों से गुजर कर मुरझा जाते हैं। ठंड से ठिठुरते जीवों की शोभा क्षीण हो जाती है। पतझड़ की शरद हवाओं से प्रकृति त्रस्त हो जाती है। पत्तों से विहीन पेड़-पौधे मानों शोक की अवस्था में होते हैं। किंतु जिस प्रकार अंधेरे के बाद उजाले का आगमन होता है उसी प्रकार शरद ऋतु के बाद सौंदर्य तथा हर्षोल्लास का आगमन बसंत ऋतु के रूप में होता है। सूखी डालियाँ हरी हो जाती हैं। पेड़ों पर नयी कोंपलें आ जाती हैं। खेत खलिहानों में फसलें लहलहाने लगती हैं। सरसों के पीले फूलों से सारा खेत ऐसे सज जाता है जैसे कि उन्होंने कोई बसंती चादर ओढ़ ली हो। इस समय मौसम अपनी पूरी आन-बान-शान से बहार पर होता है, उसकी छटा देखते ही बनती है। आम के पेड़ों पर बौर आ जाती है। एक भीनी सुगंध ही शायद कोयल को कूकने पर मजबूर कर देती है और कवि हृदय कुछ यूँ कह उठता है।

नए पुष्प डाल पर खिल गए। सूखे पत्तों के दिन लद गए।।
पेड़ों पर कोपलें कुछ और हरीली। आमों की बौर कुछ और रसीली,
भौंरों की गुंजन कुछ और रंगीली, कोयल की कूक कुछ और सुरीली
लगता है सखि बसंत आया।

शहरी जिंदगी की भाग-दौड़ में किसी को इस प्राकृतिक सौंदर्य को अपनी चलती गाड़ी से भी देखने की शायद फुर्सत नहीं।

संगीत के क्षेत्र में भी बसंत ऋतु का अपना महत्व है। औड़व-संपूर्ण जाति का राग, राग बसंत, बसंत ऋतु में गाया जाता है जिसमें मुख्यतः श्रृंगार तथा विरह रस की बंदिशें होती हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार बसंत को कामदेव का पुत्र कहा जाता है। बसंत के आते ही प्रत्येक जीव तथा प्रकृति में नवजीवन का संचार हो उठता है। हृदय में उमंग एवं उत्साह उमड़ता है, इसलिए बसंत पंचमी को मदनोत्सव भी कहा जाता है। बसंत पंचमी के आगमन से होली के त्यौहार में सवा महीने का समय रह जाता है, इस दिन से ही संपूर्ण ब्रजमंडल में अबीर-गुलाल से होली महोत्सव का शुभारंभ भी हो जाता है। इस दिन बसंत के गीत, फाग आदि भी गाए जाते हैं। इस उत्सव के देवता भगवान श्रीकृष्ण तथा सौंदर्य के देवता कामदेव माने जाते हैं। इस दिन भगवान श्रीकृष्ण तथा श्री राधा रानी की लीलाओं की झांकी ब्रजमंडल में दर्शायी जाती हैं तथा मंदिरों में भगवान की मूर्तियों को पीले वस्त्र, आभूषण तथा पीले फूलों से सजाया जाता है जिससे कि भगवान के विग्रह और भी सुंदर तथा मनोहारी लगते हैं।

पंजाब में बसंत पंचमी को बड़े उत्साह से मनाया जाता है तथा मीठे पीले चावल खाए जाते हैं। गुजरात में पतंग उड़ाकर हर्षोल्लास से इस त्यौहार को मनाया जाता है। बंगाल में इस दिन को 'पाटी उत्सव' के रूप में मनाया जाता है। अध्ययन-अध्यापन से जुड़ी संस्थाओं और विद्यालयों में विद्या, बुद्धि तथा वाणी की वरदायिनी देवी माँ सरस्वती की पूजा-अर्चना द्वारा मनाया जाता है। विद्यार्थी सरस्वती वंदना तथा गायत्री मंत्र का जाप करते हैं तथा अपने गुरूजनों तथा बड़ों के पाँव छूकर आशीर्वाद लेते हैं। इस दिन किसान भी अपने खेतों में अपने कुल देवता तथा पितरों की पूजा करते हैं तथा अपनी फसल की अच्छी उपज के लिए सूर्य देवता की भी पूजा करते हैं।

इस प्रकार यह दिन एक ओर तो ऋतु परिवर्तन द्वारा प्राकृतिक विकास का द्योतक है तो दूसरी ओर शिक्षा द्वारा बौद्धिक विकास तथा नाना प्रकार की कलाओं में नित नए विकास को दर्शाता है। आइए, हम सब वर्ष 2015 के बसंत आगमन का हृदय और बुद्धि की एकात्मकता बनाकर अपने जीवन को और अधिक खुशहाल एवं रंगमय बनाने के लिए स्वागत करें।

- प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

गतिविधियाँ

प्रधान कार्यालय में स्टाफ़ कैंटीन का शुभारंभ

प्रधान कार्यालय में स्टाफ़ सदस्यों की सुविधा के लिए स्टाफ़ कैंटीन का शुभारम्भ किया गया। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिंदरबीर सिंह (आई.ए.एस.) स्टाफ़ कैंटीन का उद्घाटन करते हुए। चित्र में श्री मुकेश कुमार जैन, कार्यकारी निदेशक श्री किशोर साँसी (तत्कालीन कार्यकारी निदेशक) तथा अन्य उच्चाधिकारीगण भी दिखाई दे रहे हैं।

ऑन-लाइन बैंकिंग

प्रधान कार्यालय, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रधान कार्यालय में समस्त कार्मिकों के लिए ऑन-लाइन बैंकिंग के प्रयोग से संबंधित जानकारी देने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। चित्र में सुश्री रुचि, प्रबंधक, आई.टी. विभाग आवश्यक जानकारी देती हुई। सामने खडे हैं, श्री मुकेश जैन, कार्यकारी निदेशक, श्री दीपक मैनी, महाप्रबंधक, आई.टी. विभाग तथा प्रधान कार्यालय के कार्मिक।

हिंदी में अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रचलन आशीर्वाद है।

डॉ. कुलवंत सिंह शेहरी

भाषा भाव अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम होती है। गूंगे में ये क्षमता अभिव्यक्त करने की नहीं होती है और बहरे में ग्रहण करने की क्षमता नहीं होती है। फिर भी गूंगा अपने भावों की अभिव्यक्ति को इशारों से समझा देता है। ईशारों की कोई भाषा नहीं होती। यही वजह है कि इशारों से कही बातों में सम्पूर्णता और स्पष्टता का अभाव होता है। जो व्यक्ति जितने बढ़िया शब्दों में भावभिव्यक्ति करता है उसे उतना ही श्रेष्ठ वक्ता माना जाता है।

कोई भी भाषा अपने आप में सम्पूर्ण नहीं कही जा सकती। जिस तरह एक नदी अपने बहाव में कई छोटी नदियों-नालों को समाहित करके वेगशाली बनती जाती है। ऐसे ही भाषा भी कालान्तर में अन्य भाषी शब्दों को आत्मसात् करके, ग्रहण करके, सशक्त और व्यापक बनती जाती है। हिंदी भाषा की बात करे तो हमें भारत वर्ष की राजनैतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक, पृष्ठभूमि पर नज़र डालनी होगी। भारत पहले मुगलों और बाद में अंग्रेजों का गुलाम रहा। दासतां के इस लम्बे समय में हिंदी भाषा पर कई प्रकार के भाषाई हमले भी हुए। मुगलों ने जहां उर्दू, अरबी, पश्तो आदि के साथ-साथ हिंदी को भी अपनाया वही हिंदी ने भी समय के प्रवाह के साथ कई भाषाओं के ऐसे शब्दों को अपनाया कि वे अब हिंदी के लगते हैं। कोई पाकिस्तानी जब हिंदी में बात करता है तो हमें एहसास होता है कि वहां के लोग हिंदी के शब्दों का भरपूर उपयोग करते हैं।

हिंदी आज अपने आप में एक सम्पूर्ण भाषा मानी जाती है। हिंदी का शब्दकोष अंग्रेजी या अन्य भाषाओं के शब्दकोषों के अनुपात में विशाल और सशक्त है। लेकिन आज हम जो हिंदी लिखते हैं क्या उसमें भाषाई मौलिकता है। हरगिज नहीं रेलगाड़ी या ऑपरेशन आज भी लौहपथ गामिनी या शल्यक्रिया के मुकाबले ज्यादा स्वीकार्य है। गांव में भी चले जाओ तो नागरिक टेलिविजन ही कहते हैं, दूरदर्शन कम। पेंसिल (कलम) कागज, कैंची, रूमाल, फूल, जज, डॉक्टर, कम्पाउडर, बस या कार तेजी से बोले और समझे जाते हैं। हिंदी भाषा के विश्वव्यापी स्वरूप की तुलना एक बहने वाली नदी से कर सकते हैं। नदी अपने साथ ढेर सारा पानी यहाँ वहाँ से लेते चलती है। तालाब एक स्थान पर रहता है। कुछ महीने बाद तालाब का पानी मलिन होने लगता है। उसमें दुर्गंध आने लगती हैं, जबकि नदी उद्‌गम से अंत तक लहलहाती, छलछलाती चलती है। कितने लोग नदियों में नहाते हैं, कचरा भी डालते हैं और यहाँ तक कि अधजली लाशें भी फेंक देते हैं, पर नदी का पानी फिर भी बदबूदार नहीं हो पाता। हिंदी में भी अन्य भाषाओं के अच्छे-बुरे शब्दों ने मिलकर इसे नया वैश्विक रूप दिया है। अब तो कम्प्यूटर और मोबाईल के युग में कई नये शब्द हिंदी ने इतने ज्यादा आत्मसात किए हैं कि हिंदी अब ज्यादा समझ आने वाली भाषा बन गई है।

हिंदी के विकास में टी.वी. और मीडिया का बहुत बड़ा योगदान है। मीडिया ने अपने प्रचार के लिए हिंदी को धड़ल्ले से अपनाया है। हर छोटा-बड़ा उत्पाद या प्रचार अब हिंदी में होता है। यदि प्रतिशतानुसार देखें तो लगभग 82 प्रतिशत मीडिया हिंदी को अपना रहा है। उससे हिंदी के विकास से चार-चाँद लग गये हैं। मीडिया ने कई विदेशी भाषी शब्दों को हिंदी से ऐसा जोड़ा है कि वे अब हिंदी के ही गये हैं। दूसरा भला फिल्मों ने हिंदी का किया है। हिंदी फिल्मों और क्षेत्रीय फिल्मों की हिंदी में डबिंग होकर यही फिल्में देश-विदेश में देखी जाती हैं जिससे हिंदी का क्षेत्र बढ़ा है।

खेलों और विशेषकर क्रिकेट ने हिंदी के प्रभाव क्षेत्र को बहुत व्यापकता दी है। आंखों देखा हाल और विशेषज्ञों की आपसी बातचीत से भी हिंदी का विकास हो रहा है। यह भी संयोग है कि मीडिया, फिल्म और खेल तीनों ने कई विदेशी शब्दों को हिंदी से जोड़ दिया है। इनके द्वारा

जोड़ शब्दों ने हिंदी के स्वरूप को जबरदस्त उछाल दिया है। "एल.बी. डब्ल्यू" या "आई.पी.एल." या फिल्मों में "गैंगवार" या "रेप" शब्द अब हिंदी को गांव कस्बों तक ले गये हैं। ऐसी हिंदी समझने वालों का दायरा बढ़ा है।

हिंदी के विकास में अन्य भाषी शब्दों ने जो योगदान दिया है वो अनुभव आश्चर्यजनक है। कई फिल्मी गीतकारों ने उर्दू, पंजाबी, भोजपुरी शब्दों का मिश्रण हिंदी के साथ करके एक नये प्रकार की मिश्रित भाषा का जो रूप दिया है वह बेजोड़ हो गया है। इन शब्दों के मेल मिलाप से हिंदी का कतई नुकसान नहीं हुआ है बल्कि हिंदी जन-जन तक पहुँची है। "मैं जट यमला पगला दिवाना" गीत ही देख लीजिए। यमला शब्द का अर्थ न जानते हुए भी ये गीत सर्व स्वीकार्य हो गया है। ऐसे ही उर्दू के कई शब्द हिंदी फिल्मी गीतों में खूब चले। कई क्षेत्रीय भाषाओं जैसे भोजपुरी, अवधी के साथ-साथ राजस्थानी भाषा के शब्दों के मिश्रण ने हिंदी को ज्यादा लोकप्रिय बना दिया है। यदि इन सब का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया जाये तो आलेख छोटा पड़ेगा।

उन सभी प्रसंगों से यह निश्चित ही कहा जा सकता है कि अन्य भाषाओं के शब्दों ने हिंदी में आकर और हिंदी के साथ मिलकर हिंदी का भला ही किया है और हिंदी के चहुँमुखी विकास में भरपूर योगदान दिया है। ऐसा कोई उदाहरण नजर नहीं आता कि बाहरी भाषा के शब्दों से हिंदी भाषा का अहित हुआ हो। यह हिंदी की भी विशालता कही जायेगी कि वह गंगा यमुना के समान बहते-बहते कई नदी नालों को अपने में समेटकर अपने मूल रूप में ही बनी रही। क्योंकि 'रेलगाड़ी' और 'बस का सफर' आज भी हिंदी शब्द है, अंग्रेज़ी के नहीं और अंग्रेज़ी के होकर भी हिंदी में मिलकर हिंदी का शब्द कोष बन गये। किसी भी भाषा के विकास में विदेशी या बाहरी शब्दों का महत्वपूर्ण योगदान माना जाना चाहिए जैसा कि हिंदी के साथ हुआ है। अतः यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि हिंदी में अन्य भाषाओं के शब्दों के प्रचलन से हिंदी को विकास तथा विशालता का भरपूर आशीर्वाद मिला है। बाहरी भाषी शब्दों के मिल जाने से हिंदी की संस्कृतजन्य कलिष्ठता दूर होकर हिंदी जन-जन की भाषा बन सकी है। हर हिंदी सेवी को, हिंदी से स्नेह रखने वाले को इस मिश्रित प्रवाह का स्वागत करना चाहिए।

- सेवानिवृत्त राजभाषा प्रबंधक

• • • •

ज़िंदगी एक जंग

मोहित अरोड़ा

सिर कटा सकते हैं लेकिन
सिर झुका सकते नहीं
राह रुक जाती है लेकिन
हम रुका करते नहीं,

पथ अगर कठिन हो तो
तुम मुँह कभी न मोड़ना
लक्ष्य अगर कठिन हो तो
तुम उम्मीद कभी न छोड़ना

मेहनत का थाम कर हाथ
हर लक्ष्य हो सकता है आसान
सच्चाई को लेकर साथ
छू सकते हो तुम सफलताओं का आसमान

गिरे तो घबराना नहीं
पथ पे काँटे हो तो थम जाना नहीं
हर हालात में तुम मुस्कुराते रहो
हर कठिनाई को अपने हौसलों से हराते रहो

जो मंजिल अभी दूर है
उसे मैं जरूर पाऊँगा
जो मुस्कुराहट कहीं खो गई हैं
उसे मैं वापस लाऊँगा।

- शाखा जहाँगीर पुरी

परवरिश

प्रदीप कुमार रॉय

''सी.बी.आई. की टीम ने बैंक के मैनेजर को रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पड़का....'' बालकनी से अख़बार को उठाते हुए मेरी नज़र अख़बार के मुखपृष्ठ पर मोटे अक्षरों में लिखी एक सुर्खी पर पड़ी.... कमरे में आकर दरवाज़ा बंद किया। क्योंकि ठण्ड कुछ ज्यादा ही थी, बाहर कोहरा था .... घना कोहरा .... अखबार वाला अखबार बाहर बालकनी में फेंक कर साईकिल से दूर ओझल हो चुका था। दीवार पर टंगी अपने कमीज़ की जेब से चश्मा निकाला और फिर पहन कर अखबार की उस सुर्खी को फिर से पढ़ा .... फिर ... जिज्ञासावश सामाचार को सरसरी तौर पर पढ़ते हुए मेरी नज़र एक नाम पर रुक गई ... 'संजय सिंह'। संजय सिंह, ... एक जाना-पहचाना नाम! कौतुहलवश मैं समाचार को आगे पढ़ता गया, जबकि ऐसे समाचारों को अक्सर मैं सुर्खियों तक ही पढ़ने में दिलचस्पी रखता हूँ। खैर, समाचार को पढ़ते-पढ़ते अब मुझे यकीन-सा होने लगा कि यह संजय सिंह और कोई नहीं बल्कि मेरे बचपन का मित्र, सहपाठी और पड़ोसी, संजय ही तो है। अभी कुछ ही दिन पहले मुझे 'फ़ेसबुक' पर उसने फ्रेंड-रिक्वेस्ट भेजी थी। मुझे उसके प्रोफाइल से पता चला था कि वह आजकल किसी ग्रामीण बैंक में शाखा प्रबंधक पद पर सीतापुर में नियुक्त है। अख़बार का यह समाचार भी सीतापुर के किसी ग्रामीण बैंक का ही है।

बाहर कोहरा इतना घना था कि खिड़की से बाहर बालकनी में रखे गमले में उगे पौधे भी नज़र नहीं आ रहे थे पर मुझे चालीस साल पहले का ..... अपना वह बचपन साफ़ दिख रहा था .....

मेरे पिताजी माल बाबू के पद पर मुगलसराय स्टेशन में नियुक्त थे। हम लोग लोको-शेड के पास वाली रेलवे कॉलोनी में रहते थे। हम तीन भाई-बहन कॉलोनी के पास ही रेलवे हाई-स्कूल में पढ़ते थे। हमारा रहन-सहन व खान-पान बेहद साधारण सा था। हम गरीब अवश्य थे पर खुशहाल थे। हमारी परवरिश ने गरीबी को हमारे ऊपर हावी नहीं होने दिया था। आज मुझे अपने माता-पिता पर गर्व है कि उन्होंने हमारी परवरिश में कोई कमी नहीं छोड़ी थी, कभी यह महसूस ही नहीं होने दिया था कि हम गरीब हैं। हमारी सभी ज़रूरतों को वे पूरा करते थे। हमने भी शायद परिस्थितिवश अपनी ज़रूरतों को सीमित रखा था। शायद हम अपनी सामर्थ्य से परिचित थे। उनकी आय कम थी पर हमें कभी उन्होंने इसका एहसास ही नहीं होने दिया था। हमें स्वाभिमान से जीने की सीख दी थी।

हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी बिल्कुल साधारण सी थी। खाने-पीने में हम माँ के हाथ के बने घर के खाने से ही संतुष्ट थे ... हाँ, माँ के हाथ की बनी स्वादिष्ट दाल-रोटी-सब्ज़ी और कभी-कभार खीर-पूड़ी पकवान वगैरह। हमें कोई पॉकेट-मनी नहीं दी जाती थी। कॉलोनी में पावरोटी, आइसक्रीम, चुस्की, गोलगप्पे इत्यादि खोमचे वाले बेचने आते तो कॉलोनी के बच्चे खूब मज़े ले-लेकर खाते-पीते और हमें खिझाते। पर हम कभी भूले से भी पास नहीं फटकते। हमें इन चीज़ों से परहेज जैसा हो गया था। पिताजी इन चीजों को बनाने की विधि में सफाई न बरतने और घटिया चीजों के इस्तेमाल करने ... इत्यादि को इतने घिनौते तरीके से सुनाते कि इन चीजों से घिन्न की बू अब तक हम अपने दिलोदिमाग से हटा नहीं पाए हैं। पता नहीं इसमें सच्चाई कुछ भी रही हो, चेतावनी शायद मुख्य रही होगी ताकि इन चीजों के प्रति हमारी रुचि न बढ़े और हम इन्हें खरीदने-खाने की ज़िद न करें। इस मामले में माँ भी कम न थीं, चना-चबेना और तरह-तरह की चटपटी चीजें वह हमेशा घर पर तैयार रखती।

संजय मेरा हम उम्र था तथा उन दिनों हमारा पड़ोसी हुआ करता था। उसके पिताजी मेरे पिताजी के सहकर्मी थे। एक ही दफ़्तर में एक ही पद पर दोनों कार्यरत थे। पर दोनों परिवारों के रहन-सहन में ज़मीन-आसमान का फर्क था। विलासिता की सभी वस्तुएं उनके यहाँ उपलब्ध थीं। जब कि हमारे यहाँ चौबीस-इंच की एक साईकिल तथा एक सिलाई मशीन के अलावा कुछ भी नहीं था। संजय अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़ता था। रिक्शे से वह स्कूल आता-जाता था। ट्यूशन के लिए उसके घर पर प्रत्येक विषय के अलग-अलग शिक्षक आते थे। उनके यहाँ नौकर-चाकर लगे हुए थे। तीज-त्योहारों पर उसके यहाँ मेहमानों का ताँता लगा रहता था। लोग भाँति-भाँति के महंगे उपहार लाते थे, उनमें दामी विदेशी खिलौने भी होते थे। प्रायः लोगों का आना-जाना लगा रहता था। घर के सामने मेहमानों की गाड़ियों की लाइनें लगी रहती थी।

निराशा और आशा मन का खेल है, इसलिए निर्विकार रहकर कार्य करना ही मनुष्य का कर्त्तव्य है।

इसके विपरीत हमारा रहन-सहन बिल्कुल सादा और साधारण था। हमारे पास खेलने के लिए न तो महंगे खिलौने होते थे और ही पढ़ाई के लिए कोई ट्यूशन। हम सरकारी स्कूल में पढ़ते थे। हमारे कपड़े साफ तो होते थे पर उनमें इस्त्री नहीं होती थी। सिर्फ गणतंत्र दिवस तथा स्वतंत्रता दिवस पर ही हमारे कपड़े इस्त्री वाले होते थे।

''उसके पिताजी की आय मेरे पिताजी से अधिक है'', ऐसा सोचकर मेरे अंतर्मन में कहीं न कहीं यह हीनभावना बलवती होने लगी थी। बचपन में ये बातें बहुत खलती थीं। मेरे अंदर की जिज्ञासा मुझे हमेशा सोचने को मजबूर करती थी कि आखिर ऐसी क्या बात है कि एक ही पद पर कार्य करते हुए दोनों की आय में फर्क क्यों है? कभी इस विषय पर अपने पिताजी से पूछता तो वे मुझे कुछ अस्पष्ट सा जवाब दे कर टाल देते और हिदायत देते, ''अभी तुम्हारी उम्र पढ़ने की है न कि इन सब बातों पर ध्यान देने की। समय आने पर सब कुछ समझ जाओगे।''

वैसे हमारी पढ़ाई के लिए मेरे पिताजी ने कोई कसर नहीं छोड़ रखी थी। दफ़्तर से फ़ारिग हो कर घर पर वे खुद हमें पढ़ाते थे। किताब-कॉपियों की कोई कमी न होती थी। वे अपने हाथों से हमारी किताब-कॉपियों पर अच्छे और मज़बूत ज़िल्द लगा देते थे। हमारी किताबें साल के अंत तक ज्यों-की-त्यों होती थी जब कि औरों के फटकर चिथड़े हो जाते। कक्षा में हम अव्वल तो नहीं आते थे पर अच्छे नम्बरों से पास ज़रूर होते थे। जबकि इतनी सुविधा-सहूलियत के बावजूद संजय पढ़ने में हम से अच्छा नहीं था।

संजय और मेरी मुलाकात शाम को सिर्फ खेल के मैदान में ही होती थी। खेल ख़त्म कर अंधेरा होने से पहले हम एक साथ सभी बच्चे अपने-अपने घर वापस आ जाते। मैदान से वापस घर आते हुए रास्ते में 'लोको-शेड' पड़ता था। लोको-शेड का यार्ड कोयले से भरा होता था। बच्चे वहां से गुज़रते हुए कोयले से ढेले उठाकर घर ले जाते थे। अपने घर पर कोयले से अंगीठी जलाते तथा खाना बनाने के काम में लाते। संजय भी उनमें शामिल होता था, उनका यह रोज़ का काम था। उनके इस काम को अवश्य ही उनके यहाँ स्वागत किया जाता रहा होगा, अन्यथा यह काम दिन-प्रतिदिन कैसे चलता। दोस्तों के इस काम से प्रेरित होकर मैं भी एक दिन, कार्य के परिणाम को सोचे बिना खेल-खेल में लोभवश कोयला उठा लाया, इस उम्मीद से कि घर में काम में आ जायेगा... पैसे बच जायेंगे। पर परिणाम कुछ विपरीत ही हुआ.... बस क्या था .... मुझे अच्छी तरह याद है, उस रात हमारे घर पर किसी ने खाना नहीं खाया था। मुझे खूब डांट पड़ी थी, शायद पिताजी से वह मेरे ऊपर पहली और आखिरी डांट थी। हम सब डरे-सहमे भूखे पेट ही सो गए क्योंकि पिताजी ने खाना नहीं खाया था। मुझे डांट जो पड़ी सो पड़ी ..... उस दिन के बाद से शाम को दोस्तों के साथ मेरा खेलना बंद हो गया था। उस एक छोटी सी ग़लती ने आज तक मुझे खेलों से वंचित रखा है।

दूसरे दिन पिताजी ने मुझे पास बुला कर सचेत करते हुए कहा था, ''बिना पूछे किसी का सामान उठाना अनैतिकता है, चोरी है ... चाहे वह एक ढेला कोयला ही क्यों न हो ....'' फिर समझाते हुए कहा था, ''मेहनत की कमाई से मिली रुखी-सूखी रोटी चोरी या अनैतिक उपायों से प्राप्त खीर-पूड़ी से ज्यादा स्वादिष्ट होती है।'' पिताजी ने इन शब्दों ने मुझे मेरे जीवन में कई बार ग़लत काम करने से रोका है। आज भी मेरे कानों में ये शब्द गूंजते हैं और प्रेरणा देते हैं।

इस घटना को अभी थोड़े ही दिन हुए थे। एक दिन शाम को स्कूल से वापस आते हुए कॉलोनी में शोर-शराबा और भीड़-भाड़ देखकर मैं डर-सा गया था। संजय के घर के सामने पुलिस का पहरा था। हमारे घर पर माँ आधे किवाड़ खोले अंदर से झांकती हुई हमारा इंतजार कर रही थी। घर पहुंचते ही माँ ने दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया ताकि बाहर होने वाली घटनाओं को जानने समझने से हमें वंचित रखा जा सके। देर रात तक बाहर चहल-पहल थी। पर हमें इसका कोई अंदाज़ा नहीं था। असलियत तो हमें अगले दिन पड़ोस के बच्चों से स्कूल में मिल ही गई......।

उन दिन रेलवे के सतर्कता विभाग ने संजय के घर पर छापा मार कर लाखों नगदी के साथ गहने इत्यादि भी ज़ब्त किये थे, बैंक के खाते भी ज़ब्त किये गए थे। लॉकर से गहने, नगदी तथा सोने के बिस्कुट भी बरामद किये गए थे। संजय के पिता के पास उनकी आय से अधिक सम्पत्ति मिलने का आरोप था। वे ठेकेदारों-बनियों से उनकी माल-ढुलाई के लिए रिश्वत लेते थे। इस खुलासे से मेरे मन में उपजे कई अनबुझे सवालों का हल मिल गया था। अब समझ में आया था कि आखिर क्यों वे इतनी शानोशौकत से रहते थे। उनका रहन-सहन हमसे क्यों अलग और अच्छा था। हीनभावना से ग्रसित मेरा मन अब गौरवान्वित महसूस कर रहा था। ईमानदार तरीकों से कमाये गये धन की महत्ता तथा भौतिक सुख-सुविधा के लिए कभी न समाप्त होने वाली लार-टपकाऊ लिप्सा, जिसे आज की दुनिया में लोग व्यवहारिक होना कहते हैं, से मिली वितृष्णा को मैं अच्छी तरह अनुभव कर रहा

था।

बाहर बालकनी में धूप खिल चुकी थीं, कोहरे की घनी परतें अब वातावरण से हट चुकी थी। इसका अहसास मुझे तब हुआ जब मेरी पत्नी सीमा ने, चाय की प्याली के साथ बालकनी में मेरा इंतजार करते हुए, आवाज़ लगा कर मुझे अतीत से वापस वर्तमान में लाया, मैंने बाहर देखा .... सूर्य की किरणें ठण्ड से शिथिल पड़ी प्रकृति को अपने कोमल ऊष्म स्पर्श से जगा रही थीं, कई दिनों से घरों में कैद लोग बाहर नज़र आ रहे थे, बच्चे तो गली में अपना खेल भी जमा चुके थे, आज अरसे बाद सूर्य देव के दर्शन जो हो रहे थे। पौधे और पत्तियों में भी चमक साफ़ नज़र आ रही थी। सीमा चाय की चुस्की लेते हुए गमले के पौधों की बिखरी हुई लता व बेलों को अपने हाथों से सहेज रही थी। यह उसके रोजमर्रा के जीवन का एक अहम हिस्सा था। पर कई दिनों से मौसम के अत्यधिक खराब होने के कारण उससे पौधों की देखभाल नहीं हो पायी थी। पौधों की अव्यवस्थित बेलों को सहेजते हुए सीमा ने मुझ से कहा, "देखो न, ये पौधे भी कितने लापरवाह हो गए हैं .... कुछ दिनों से इनकी देख-भाल नहीं की तो ये अपनी मनमानी कर गए, जहाँ तहाँ फैल गए ... बेढंगे .... बेतरतीब।"

"नहीं सीमा, ये बेजुबान और कोमल पौधे उन बेसुध छोटे-छोटे बच्चों की तरह हैं, जिन्हें अच्छे-बुरे का अहसास नहीं होता। हमारी ज़िम्मेदारी है उन्हें उचित मार्ग दिखाने की, अन्यथा वे कहीं भटक-से जाते हैं, हो सकता है इनकी परवरिश में कोई कमी रही होगी और शायद कहीं हम ही अपनी ज़िम्मेदारी से चूक गए होंगे वर्ना इनकी क्या गलती है" - ऐसा कहते हुए मैंने चाय की प्याली थाम तो ली पर मेरे अंतर्मन में अभी भी मेरे बचपन की बातें गूँज रही थी।

प्रधान कार्यालय, सतर्कता विभाग

फील्ड महाप्रबंधक श्री एस० क्वात्रा का आंचलिक कार्यालय कोलकाता का दौरा

श्री अशोक कुमार, आंचलिक प्रबंधक कोलकाता, फील्ड महाप्रबंधक श्री एस. क्वात्रा का फूलों से स्वागत करते हुए।

श्री एस. क्वात्रा, फील्ड महाप्रबंधक आंचलिक कार्यालय कोलकाता के अधीन शाखाओं के शाखा प्रभारियों को संबोधित करते हुए।

श्री अशोक कुमार सिन्हा आंचलिक प्रबंधक, आंचलिक कार्यालय कोलकाता के अधीन शाखाओं के शाखा प्रभारियों को संबोधित करते हुए।

जो शत्रु आक्रमण करते हैं, उनसे मत डरो, उन मित्रों से डरो जो चापलूसी करते हैं।

"ये दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो......."

8 फरवरी, जगजीत सिंह के जन्म दिवस पर विशेष

- अजय अरोड़ा

उपरोक्त शीर्षक पढ़ते-पढ़ते हममें से कई जनों के मन में तो ये शब्द पूरी स्वर-लहरी के साथ चल गये होंगे। जी हां, बिल्कुल सही बात है। यह वो ग़ज़ल है जिसे गाया ही कुछ इस अंदाज़ से गया था कि आज भी जब ये शब्द पढ़े-लिखे या सुने जाते हैं, बड़ी सहजता के साथ हृदय तक पहुँच जाते हैं और कहीं न कहीं हमें अपने अतीत में, अपने बचपन व बचपन की रूहानियत में ले जाते हैं। अब देखिए न, ये सब लिखते-लिखते मेरा दिल भी अंदर से यह कह रहा है कि पूरा न सही, इन शब्दों को थोड़ा तो और आगे बढ़ाऊँ, जो कुछ इस प्रकार से हैं :

ये दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो,
भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी,
मगर मुझको लौटा दो, बचपन का सावन
वो कागज़ की क़श्ती, वो बारिश का पानी,
वो कागज़ की क़श्ती............................।

मुझे नहीं लगता कि हममें से कोई भी उर्दू न जानते हुए भी इस ग़ज़ल का मतलब न समझता हो। और यही ख़ासियत थी उस शख़्सियत की, जिसने इसे गाया। जी हां, मैं उसी सुप्रसिद्ध ग़ज़ल गायक की बात कर रहा हूँ जिसने इसे गाया - जगमोहन सिंह।

क्या?आपको कुछ अटपटा लग रहा है ये नाम। चलिये, मैं इसे आपके हिसाब से ठीक कर देता हूँ - जगजीत सिंह। दरअसल, पुरानी रियासत बीकानेर (अब राजस्थान के) इलाके श्रीगंगानगर में जन्मे प्रसिद्ध ग़ज़ल गायक जगजीत सिंह का बचपन का नाम जगमोहन सिंह ही था। बाद में, सरदार अमर सिंह एवं सरदारनी बचन कौर के घर 8 फरवरी 1941 को जन्मे इस बालक, जगमोहन सिंह का नाम बदल कर जगजीत सिंह कर दिया गया।

श्री गंगानगर के ही खालसा हाई स्कूल और राजकीय महाविद्यालय में प्रारम्भिक शिक्षा पाने के बाद डी.ए.वी. कॉलेज जालन्धर से कला में स्नातक व हरियाणा के कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से इतिहास में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल कर चुके जगजीत सिंह में गाने का कौशल नैसर्गिक था, नेचुरल था। इनके पिता ने गुरुद्वारों में होने वाले कीर्तन के दौरान गाये जाने के इनके शौक को पहचाना और बाद में इन्हें अपनी इस कला को तराशने व निखारने के लिए भारतीय शास्त्रीय संगीत में पारंगत संगीतज्ञों, यथा-पण्डित छगनलाल शर्मा एवं उस्ताद जमाल ख़ान के पास भेजा। यूं इनके पिता गायकी के इनके शौक के बावजूद कैरियर के तौर पर इन्हें सरकारी नौकरी ही करवाना चाहते थे। किंतु स्वयं जगजीत सिंह इसके लिए तैयार नहीं थे, वे चाहते थे, गायन को ही अपना कैरियर बनाया जाए।

फलस्वरूप 24 वर्ष की आयु में सन् 1965 में जगजीत सिंह बिना बताये घर छोड़ कर चले गये और माया नगरी मुम्बई में पहुंच गये और फिल्मों में गायन के लिये अपना भाग्य आजमाने लगे। यूं शुरू में इन्हें विज्ञापनों में जिंगल्स गाने का काम मिला और बाद में धीरे-धीरे वह पार्श्व गायन में आ गये। गायकी में अपने विभिन्न प्रयोगों को करते-करते वह गीतकार, संगीतकार, गायक सभी में इतने पारंगत होते चले गये कि इनको सुनने चाहने वालों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती ही चली गई। फिल्मों में भी पार्श्व गायन में इनको बहुत अवसर मिले। ग़ज़ल गायकी में तो अपने विभिन्न प्रयोगों से जगजीत सिंह जी एक तरह की क्रांति ले आए। ग़ज़ल जो उन दिनों में धीरे-धीरे लुप्त हो चली थी उसका पुनरुत्थान व लोकप्रियता बढ़ाने का नायाब काम किया जगजीत सिंह जी ने और इसी कारण इन्हें ग़ज़ल सम्राट कहा जाने लगा।

एक समय था जब ग़ज़ल केवल महफ़िलों में गाई जाती थी जो कि किसी रईस के घर रखी जाती थी जिसमें बहुत थोड़ी तादाद में ही रईस लोग (अमीर) मौजूद होते थे। ग़ज़ल को तब तक एक मुस्लिम-कला ही माना जाता था और उर्दू जानने वाले लोग ही इन महफिलों में शरीक होते थे। ग़ज़ल गायकी तब चन्द मुस्लिम कलाकारों, विशेष रूप से पाकिस्तान के गायकों तक ही सीमित थी। जिनमें नूरजहाँ, मल्लिका पुखराज, बेग़म अख़्तर, मेंहदी हसन आदि नाम प्रमुख थे। ग़ज़ल-सम्राट जगजीत सिंह ने ग़ज़ल गायकी में गायन और वाद्यों के ऐसे-ऐसे प्रयोग किए कि इसे आम लोगों द्वारा भी सुना और सराहा जाने लगा। ग़ज़ल गायकी मुस्लिम आवेश से बाहर आ कर हिंदू व सिख श्रोताओं द्वारा भी सुनी जाने लगी और इसका दायरा उर्दू से आगे बढ़ कर हिंदी, पंजाबी व बंगाली भाषा में भी विस्तारित हो गया। फलस्वरूप चन्द लोगों की महफ़िलों के दायरे से बाहर आ कर सार्वजनिक रूप में बड़े-बड़े विशाल परिसरों में इसका सार्वजनिक आयोजन किया जाने लगा। जिसमें बड़ी तादाद में मध्यम-वर्गीय श्रोता भी ग़ज़ल सुनने के लिये जुटने लगे। हिंदी भक्ति संगीत में भी जगजीत सिंह ने भरपूर गाया और पंजाबी मे टप्पे इत्यादि भी गाये। पंजाबी भाषा में भी कई ग़ज़लें गाई। मज़े की बात यह रही कि बंगला-पृष्ठभूमि में जन्मी और पली-बढ़ी चित्रा सिंह, जो इनकी अर्द्धांगिनी बनी, इनके साथ मिलकर उन्होंने भी पंजाबी में कई ग़ज़लें गाईं। उस वक्त पति-पत्नी की यह एक - मात्र नायाब जोड़ी ग़ज़ल गायकी में एक दम हिट थी। दोनों ने अलग-अलग और साथ मिल कर कई बेहतरीन ग़ज़लें गाई और श्रोताओं की वाह-वाही बटोरी। इनकी कुछ प्रमुख ग़ज़लें हैं :-

- ऐ खुदा रेत के सेहरा को समुंदर करदे.....
- ये तो नहीं कि ग़म नहीं, या मेरी आंख नम नहीं....
- कभी गुंचा, कभी शोला, कभी शबनम की तरह। लोग मिलते हैं, बदलते हुये मौसम की तरह.......
- सोचा नहीं अच्छा-बुरा, देखा-सुना कुछ भी नहीं, मांगा खुदा से रात-दिन तेरे सिवा कुछ भी नहीं......
- कभी तो खुल के बरस, अपने मेहरबां की तरह.....
- आँख से आँख मिला, बात बनाता क्यूं है, तूं अगर मुझसे खफ़ा है तो छुपाता क्यों है.....
- मंज़िल न दे, चराग न दे, हौंसला तो दे, तिनके का ही सही तूं मगर आसरा तो दे....
- हुज़ूर आपका भी ऐहतराम करता चलूं, इधर से गुज़रा था, सोचा सलाम करता चलूं......
- सफ़र में धूप तो होगी, तुम आओ तो सही......
- मैं ख्याल हूं किसी और का, मुझे चाहता कोई और है
- ऐसा लगता है ज़िंदगी तुम हो....
- गुलशन की फ़कत फूलों से नहीं, काँटों से भी जन्नत होती है...
- शायद मैं ज़िंदगी की सहर ले के आ गया, कातिल को आज अपने ही घर ले के आ गया.....
- मेरी अज़ब है ज़िंदगी, किसी से क्या गिला करुं, तकदीर रूठ जाये तो मेरे खुदा! मैं क्या करुं...... ।
- सर ही न झुका, दिल भी तो झुका, कल्याण यहीं होगा, निर्वाण यहीं होगा?, बुद्धम-बुद्धम, शरणम-शरणम गच्छामि....
- उस मोड़ से शुरू करें फिर से ये जिंदगी, हर शै जहां हसीन थी, हम तुम थे अजनबी...

ग़ज़ल व जगजीत सिंह जी के साथ मेरे कुछ सस्मंरण

मैंने वर्ष 1983 में जब बैंक में एक परिवीक्षा अधिकारी के रूप में ज्वाइन किया था। मेरी पोस्टिंग शाखा हज़रत्त गंज लखनऊ में हुई थी। जहां मैं कोई 4-5 माह रहा था। यह वह समय था जब जगजीत सिंह ने ग़ज़ल गायकी को लोकप्रियता के ऐसे मुकाम पर पहुंचा दिया था कि कई अन्य युवा ग़ज़ल गायक उभर रहे थे। 'निकाह' पिक्चर उन्हीं दिनों रिलीज़ हुई थी जिसकी चर्चा उसमें शामिल ग़ज़लों के कारण भी काफी थी, मसलन-''दिल की ये आरजू थी कोइ दिलरूबा मिले.... अब तक तो जो भी दोस्त मिले, बेवफ़ा मिले....., दिल के अरमाँ आंसुओं में बह गये...., हम वफ़ा करके भी

तन्हा रह गये.....।" अनूप जलोटा, पंकज उदास आदि कई और ग़ज़ल गायकों के नामों की भी चर्चा होने लगी थी। लखनऊ में उन दिनों अनूप जलोटा के ग़ज़लों के कार्यक्रम हुआ करते थे। मेरे एक मित्र के भाई आई.ए.एस. थे उन्हें इस तरह के कार्यक्रमों हेतु फ्री कॉम्पलीमेंट्री पास मिलते थे। उसने एक-दो बार मुझे अपने साथ जाने को कहा। यूं मुझे तब ग़ज़लें सुनने में तो अच्छी लगती थी, पर उसके लिये कार्यक्रम में जा कर देर-रात तक उन्हें सुनना, मुझे गवारा नहीं था, अतः मैं शालीनता से उनके ऐसे प्रस्तावों को वीटो कर देता था।

बाद में मेरी पोस्टिंग मुम्बई में हुई। एक ऐसी शाखा में जहां श्री जगजीत सिंह जी का खाता था। तो एक दो दफे उनसे मुलाकात हुई इतने बड़े कलाकार होने के बावजूद वह धरातल पर रहने वाले इंसान थे, ऐसा मैंने उन्हें पाया। अहम की बू उनमें लेश-मात्र भी नहीं थी। ईमानदार व सादगी पसंद और हँसी मज़ाक से हर पल गुदगुदा देने वाले।

एक मर्तबा मेरे बड़े भाई मुम्बई आये थे तो मुझे मेरी शाखा में दोपहर के वक्त मिलने आये। लगभग उसी वक्त जगजीत सिंह जी भी आ गये। जब मैंने अपने भाई से जगजीत सिंह जी की तरफ इशारा करके पूछा कि आप इन्हें पहचानते हैं तो भाई धीरे-धीरे जैसे ही कह रहे थे कि आप शायद ग़ज़ल गायक जगजीत... उन्होंने बीच में ही टोक कर मुस्कुराते हुये कहा, "जी मैं ही हूँ वो नाचीज़ हूँ जगजीत सिंह। और फिर उनसे इस कदर बातचीत करने में मशगूल हो गये, मानो उनको बहुत पहले से जानते हों।

एक बार की बात - एक बार मैंने उनसे पूछा था कि चाय पियेंगे, चाय मंगाऊं। तो उन्होंने कहा नहीं उन्हें चाय महंगी पड़ती है। उन दिनों दर असल, चाय वाला हमारी शाखा से बहुत दूर बैठता था और कम से कम आधा घण्टा लगता था, चाय आने में। जब मैंने कहा कि नहीं जल्दी मंगवा देता हूँ, तो बोले, "मुझे पता है आप मंगवा तो जल्दी लेंगे, पर आयेगी तो नहीं। चलिये मंगवा लीजिए आपके.... स्नेह के आगे मेरा समय क्या मायने रखता है।"

एक मर्तबा, जब मैंने उस शाखा में अभी नया-नया ज्वाईन किया था और तब तक मेरा जगजीत सिंह जी से परिचय नहीं हुआ था। उन्हीं दिनों उनका एक ग़ज़ल सन्ध्या का कार्यक्रम आयोजित होना था। समाचार-पत्रों के माध्यम से अन्य शाखा में कार्यरत् मेरे एक साथी ने मुझे उसके लिये कम्प्लीमेंटरी पास की गुहार लगाई तो मैंने उसे बताया कि उसे अकेले जाना पड़ेगा क्योंकि मैं देर-रात तक ऐसे प्रोग्राम देखने की बजाय विश्राम को ज्यादा तरज़ीह देता हूँ, तो उसने कहा "कोई बात नहीं, वो बाद में देखा जायेगा, दो-चार पासेज़ ले लो।" मैंने शाखा में पहले से कार्यरत् अपने साथी को इस बाबत बताया उन्होंने तुरंत जगजीत सिंह जी को फोन लगाया और बताया कि शाखा में नये आये अधिकारी अजय अरोड़ा उनका ग़ज़ल प्रोग्राम देखना चाहते हैं तो उन्होंने कहा। हां, हां, आ जायें, पर ज्यादा लोगों को इकट्ठा न करें क्योंकि यह कार्यक्रम कैंसर से संबंधित चैरिटी प्रोग्राम है। जब उनसे यह पूछा गया कि फिर कितने आयें तो उन्होंने बड़ी सादगी से उन साथी अधिकारी को कहा, एक आप और आपकी धर्मपत्नी, एक अरोड़ा जी और उनकी धर्मपत्नी....। जब उन्हें बताया गया कि अरोड़ा जी तो अकेले हैं, कुंवारे हैं तो मज़ाक करते हुए बोले, "ता फिर किसे नूं वी नाल लिआणा चाण लै आण"। अलबत्ता मेरे साथी के ज़ोर डालने पर साथ की दरकार हेतु मैं और वह दो जने गये। प्रोग्राम का भरपूर लुत्फ उठाया, इतना ज़्यादा, इतना ज़्यादा कि जैसे ही प्रोग्राम खत्म हुआ लगभग एक ही समय में एक स्वर में एक दूसरे को बोला कि अगला ऐसा कोई भी कार्यक्रम चूकना नहीं चाहिए।

उनके खुश नुमा मिज़ाज की एक और झलक - इसी तरह एक कॉलेज वालों ने कोई चैरिटी प्रोग्राम रखा था, मैं अपने आस-पास की शाखाओं के साथियों को इनके प्रोग्राम में ले गया। कुछ 7 लोग थे हम। उनके बताए अनुसार कॉलेज स्टेज के साथ बने ग्रीन रूम (जहां स्टेज से पूर्व वे अपनी पूरे आर्केस्ट्रा के साथ तैयार होते हैं) के बाहर नियत समय पर हम पहुंच गए और समय के पाबन्द जगजीत सिंह जी भी सही वक्त पर वहां पहुंच गए। गाड़ी से अन्य कलाकार जब अपने वाद्य यन्त्रों को निकालने लगे। मेरे से

गले मिलते हुए पूछने लगे, कितने लोग है हम। मेरे से पूछ कर जब उन्होंने उनका स्वागत करने के इंतजार में खड़े कॉलेज स्टूडेंटस के आर्गेनाईजर्स को कम्पलीमेंटरी पासेज के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि ऐसा तो कोई प्रोविज़न उन्होंने नहीं किया तो तुरंत अपने साथी कलाकारों को आवाज़ लगा कर बोले, ''चलो भई चलो, सामान गाड़ी में वापिस डालो, इन्होंने तो सबसे बड़े हमारे ग़ज़ल प्रेमियों के लिये तो व्यवस्था ही नहीं की है।'' तुरत-फुरत आर्गेनाइज़र्स 7 पासेज ले आये।

इनकी सादगी की और बानगी : मैं मुम्बई से दिल्ली आ गया था। मेरा इनसे सम्पर्क काफी कम, न के बराबर रह गया था। कुछ वर्षों बाद इनका सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम में एक प्रोग्राम था। जिस दिन था उसी दिन ही समाचार-पत्र में विज्ञापन के माध्यम से पता लगा। उन दिनों सैलफोन नहीं होते थे मैंने इधर-उधर से आर्गेनाइज़र्स का सम्पर्क निकाला और उनसे पूछ कर दिल्ली के अशोका होटल (जहाँ वह रूके थे) में सम्पर्क साधा। उस बारगी मैं उनके प्रोग्राम में नहीं जाना चाहता था, मात्र उन्हें उनके उस कार्यक्रम के लिए शुभ-कामना देना चाहता था। ऑपरेटर ने बताया कि वह तो बस अभी प्रोग्राम के लिए निकलने ही लगे हैं, मेरे बार-बार आग्रह करने पर उन्होंने सम्पर्क करवाया। मैंने अपना नाम व परिचय कराये बिना उन्हें मुझे पहचानने को कहा। लम्बा अंतराल होने के कारण वह जल्दी नहीं पहचान पा रहे थे। उन्होंने यह तो कहा कि आवाज़ तो जानी-पहचानी लग रही है और यह कि मैं बैंक से हूँ पर मेरा नाम नहीं बता पाये। फिर जब मैंने बताया तो न पहचान पाने के लिए मुझसे क्षमा मांगी और बोले, आ जाओ, सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम में मिलते हैं वहां मेरा प्रोग्राम भी देखना और बाद में साथ बैठ कर बातचीत भी हो जायेगी। जब मैंने प्रोग्राम में न आ पाने के लिये अपनी असमर्थता जताई और बताया कि मैंने तो उन्हें प्रोग्राम हेतु शुभ कामनायें देने के लिये ही कॉल किया था तो उन्होंने उसके लिए मेरा आभार जताया। लेकिन अपने प्रोग्राम हेतु तैयार हो कर निकल पड़ने की स्थिति में होने के बावजूद उनमें कोई हड़बड़ाहट की झलक नज़र नहीं आई थी। ऐसी स्थिति में मुझे पहचानने की अटकलें लगाते व बातचीत करते-करते कोई 10 मिन्ट हो चले थे, ऐसे सीधे-साधे, भोले-भाले स्वभाव के थे श्री जगजीत सिंह जी - ऐसा ही मैंने उन्हें हर दम पाया।

एक और चीज़ मैंने उनके व्यक्तित्व में पाई। जो नायाब थी उनमें। जगजीत सिंह जी का पारिवारिक जीवन संघर्ष भरा रहा था। इतने उथल-पुथल वाला, उतार-चढ़ाव वाला जीवन होते हुए भी अपनी ग़ज़ल-गायकी से अविरल, श्रोताओं को अपने आखिरी समय तक भी जोड़े रखा, छोड़ा नहीं। हार नहीं मानी। पहले 1990 में 21 वर्षीय पुत्र विवेक जब एक सड़क दुर्घटना में मारा गया तो इन्हें बहुत बड़ा झटका लगा। चित्रा सिंह जी ने तो इस हादसे के बाद लगभग गाना ही छोड़ दिया। "Some one Some where" के नाम से रिलीज़ हुई इन दोनों की इकट्ठी वह आखिरी एलबम थी जिसमें गाई गई ग़ज़लों में भावनात्मक रूप से बेटे की मृत्यु के कारण हुई व्यक्तिगत क्षति की छाप साफ अनुभव होती थीं। इसके बाद से चित्रा सिंह जी ने तो गाना बिल्कुल ही छोड़ दिया। परंतु जगजीत सिंह जी ने एक वर्ष के अंतराल के बाद अपने आपको संभाला और इस हादसे से उबरते हुए ग़ज़ल-गायकी फिर से शुरु कर दी और बाद में इनके द्वारा गाई ग़ज़लों की लोकप्रियता और बढ़ी। लतामंगेश्कर के साथ एक एलबम ''सज़दा'' भी रिलीज़ हुई। जैसा कि आपको पता ही होगा कि ग़ालिब की ग़ज़लों को भी इन्होंने धारावाहिक में बखूबी गाया।

बेटे की मृत्यु का हादसा जैसे इनके लिये कम नहीं था। वर्ष 2009 में इनकी बेटी मोनिका जिनका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं चल रहा था और दो बार तलाक होने के कारण अवसाद में चल रही थी, उन्होंने खुदकशी कर ली। जगजीत सिंह जी, जो अपने जवान बेटे को खो चुकने के बाद जैसे-तैसे अपने आप को संभाल कर पुनः अपने जीवन को पटरी पर लाने में प्रयासरत थे, इस दूसरे हादसे से तो बिल्कुल टूट गए। इसके बाद तो लगातार उनके स्वास्थ्य में गिरावट आती गई और फिर एक दिन अचानक उनके दिमाग की एक रक्त वाहिका फट गई और उन्हें 'कोमा' में अस्पताल में भर्ती कराया गया, जिसमें से वह पुनः बाहर नहीं आ सके और 10 अक्तूबर 2011 को उनका देहावसान हो गया। उस दिन ग़ज़ल-गायकी के नीले आसमान पर चमकता यह सितारा अस्त हो गया। लेकिन अपने पीछे अपनी यादें उन ग़ज़लों के रूप में छोड़ गया जो आज

भी श्रोताओं के हृदय को बस छू जाती हैं। अपने नाम के अनुरूप विश्व भर में अपने श्रोताओं के हृदय को जीतने वाला यह सितारा जगजीत सिंह आज भी उनके हृदय का सम्राट है। करोड़ों दिलों पर अपनी ग़ज़ल गायकी से लगभग चार दशकों तक राज करने वाले इस गायक पर उसका यह नाम कितना सटीक बैठता है - जगजीत सिंह। उनकी कोई भी ग़ज़ल गीत, संगीत ऐसा न था जिसने हमारे दिल को न छूआ हो, मन को न जीता हो।

अपनी ओर से इस अनूठे ग़ज़ल-गायक को सच्ची श्रद्धांजलि स्वरूप पुनः मैं उसी ग़ज़ल से ही इस लेख की इति श्री करूंगा जिससे इसका आग़ाज किया था :

मुहल्ले की सबसे पुरानी निशानी,
वो बुढ़िया जिसे बच्चे कहते थे नानी,
वो नानी की बातों में परियों का डेरा,
वो चेहरे की झुर्रियों में सदियों का फेरा,
भुलाये नहीं भूल सकता है कोई, वो छोटी सी रातें,
वो लम्बी कहानी,

वो काग़ज़ की कश्ती वो बारिश का पानी.................।
कड़ी धूप में अपने घर से निकलना,
वो चिड़िया वो बुलबुल, वो तितली पकड़ना,
वो गुड़िया की शादी में लड़ना झगड़ना,
वो झूलों से गिरना, वो गिर के संभलना।
वो पीतल के छल्लों के प्यारे से तोहफे,
वो टूटी हुई चूड़ियों की निशानी।
वो काग़ज़ की कश्ती वो बारिश का पानी.................।

कभी रेत के ऊंचे टीलों पे जाना,
घरौंदे बनाना, बनाकर मिटाना,
वो मासूम चाहत की तस्वीर अपनी,
वो ख़्वाबों, खिलौनों की जागीर अपनी,
न दुनिया का ग़म था, न रिश्तों के बंधन,
बड़ी खूबसूरत थी वो ज़िन्दगानी,
वो काग़ज़ की कश्ती वो बारिश का पानी,
वो काग़ज़ की कश्ती वो बारिश का पानी,
वो काग़ज़ की कश्ती वो बारिश का पानी।

- प्रधान कार्यालय, एटीएम कक्ष

भावभीनी विदाई

श्री जी. एस. सचदेवा ने दिनांक 31 जनवरी, 2015 को बैंक के मुख्य महाप्रबंधक के पद से सेवा-निवृत्त हुए। पी.एस.बी. परिवार आपके एवं आपके परिवार के उज्ज्वल सुखद भविष्य की कामना करता है।

सुस्वागतम

श्री इकबाल सिंह भाटिया ने दिनांक 04 फरवरी, 2015 से बैंक के मुख्य महाप्रबंधक का कार्यभार ग्रहण कर लिया है। पी.एस.बी. परिवार आपका हार्दिक अभिनंदन करता है।

प्रशासक नहीं, प्रिय शासक बनें

अनिल कुमार गुप्ता

घर-परिवार, समाज, राजकीय हो या आध्यात्मिक ढाँचा, सब में प्रशासनिक व्यवस्था होती है। जिसकी प्रशासनिक व्यवस्था जितनी अच्छी होती है, उसकी उतनी ही श्रेष्ठ और बेहतरीन कार्यक्षमता देखने को मिलती है। परंतु कई बार देखा जाता है कि कार्य भले ही व्यवस्थित चले परंतु करने वालों में सद्भावना का वातावरण न हो, तनावपूर्ण परिस्थितियों में कार्य हो रहा हो तो उतनी सफलता नहीं मिलती, जितनी मिलनी चाहिए। इसका सीधा संबंध प्रशासनिक व्यवस्था से होता है। काफी शोध और चिंतन के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि जैसी हमारी अवस्था होगी, उसी तरह की व्यवस्था बनती है। आज कार्यालयों, कार्य स्थान, प्राइवेट संस्थान हो या घर की व्यवस्था, इन सब में असंतोष और अव्यवस्था का आलम है। इसलिए इस बात पर ज़ोर दिया जाने लगा है कि व्यक्तिगत शासन कैसे किया जाए जिससे बेहतर प्रशासन हो सके।

वर्तमान समय में जबकि समस्याएँ व तनाव चारों ओर व्याप्त है, तो ऐसी स्थिति में मानसिक शक्ति की परम आवश्यकता है। प्रशासन के क्षेत्र में त्वरित निर्णय लेने पड़ते हैं। व्यक्ति व परिस्थिति को परखने में, सत्य-असत्य का भेद करते हुए अमल करना पड़ता है। अतः प्रशासक का मन बहुत शांत और दृढ़ होना चाहिए। इसके लिए उसका स्वयं पर अनुशासन ज़रूरी है। दूसरे शब्दों में, आत्मानुशासन के बिना कुशल प्रशासन संभव नहीं है। कुशल प्रशासन के लिए व्यक्ति को स्वयं में नैतिक मूल्यों की धारणा करनी होगी। आध्यात्मिक संपदा से सम्पन्न बनना होगा। जब हम साथी कार्यकर्ताओं के प्रति समानता रखेंगे, तभी वे हीन-भावना त्याग कर हमारे सहयोगी बन सकते हैं और हम अच्छे प्रशासक बन सकते हैं।

मानव मन चंचल है, क्योंकि मैं कौन हूँ? इस बात का वास्तविक ज्ञान नहीं है। इसलिए आज प्रशासन के क्षेत्र में भी बहुत तनाव देखने को मिलता है। यदि प्रशासक समस्याओं से विचलित हो जाए, तो प्रशासन क्या चलाएगा। यदि समाज में भाईचारे की भावना आ जाए, कानून के साथ प्रेम का संतुलन हो जाए, न्याय, दया, सद्भावना तथा मूल्य आधारित प्रशासन हो तो निश्चय ही हम स्वयं के साथ-साथ पूरे विश्व को भी बदल सकते हैं। इसलिए सिर्फ प्रशासक नहीं, प्रिय शासक भी बनें। भले ही हमारे पास उच्च अधिकार है, परन्तु उनका उपयोग, सेवाभाव, प्रेम व भाईचारे से करें, इसके लिए सर्वप्रथम प्रशासक का मन शान्त व शीतल होना जरूरी है।

वर्तमान हालातों और परिस्थितियों के हिसाब से प्रशासनिक व्यवस्था में आध्यात्मिकता की बेहद आवश्यकता है। क्योंकि किसी भी देश का प्रशासनिक ढाँचा जितना मज़बूत होगा वह देश उतनी ही तेज़ी से तरक्की के नए आयाम गढ़ेगा।

आध्यामिकता से हमारे अंदर प्रशासनिक क्षमता का विकास होता है। इससे हम ज्यादा कुशलतापूर्वक और अच्छी रीति से प्रशासन कर सकते हैं। इससे व्यक्ति का चित्त शांत, स्थिर और सकारात्मक होता है। जिससे प्रशासक कठिन तथा विपरीत परिस्थितियों में भी उचित व सही निर्णय ले पाता है। जिससे उसका जीवन आदर्श बन जाता है और वह अन्य के लिए प्रेरणा स्रोत होता है। स्वयं को आत्मा समझ परम प्रशासक सर्व शक्तिमान, सर्वोच्च सत्ता परमपिता परमात्मा से संबंध जोड़ने से हमारी शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं। अध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त कर, हम असंभव कार्य को भी संभव कर सकते हैं। सहज राजयोग के अभ्यास से हमारे अंदर शासन करने की शक्ति, सहनशक्ति, परखने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति, सामना करने की शक्ति, सहयोग करने की शक्ति, विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति आदि का विकास होता है।

आपको बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि विश्व के सर्वोच्च प्रशासक स्वयं परमपिता परमात्मा शिव का इस धरा पर अवतरण हो चुका है। विषय विकारों से ग्रसित इस पतित कलियुगी दुनिया को पावन बनाने के लिए परमात्मा सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। अतः परम प्रशासक परमात्मा से प्रशासनिक शक्तियों का संचार स्वयं में कर कुशल प्रशासक की भूमिका निभाएगा।

आँचलिक कार्यालय, लखनऊ

कोई भी महान व्यक्ति अवसरों की कमी के बारे में शिकायत नहीं करता।

वित्त-मंत्रालय : वित्तीय सेवाएँ विभाग के निर्देशानुसार प्रधान कार्यालय तथा आंचलिक कार्यालयों में ''मस्तिष्क-मंथन'' के विशेष सत्र

दिनांक 20.02.2015 को प्रधान कार्यालय सतर्कता विभाग में वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग के निर्देशानुसार 'मस्तिष्क-मंथन' सेमिनार का आयोजन किया गया। चित्र में मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री एम. जी. श्रीवास्तव तथा महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री राकेश चन्द्र नारायण भी दृष्टव्य हैं।

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा नामित राजभाषा अधिकारियों के लिए 'मस्तिष्क-मंथन' का विशेष सत्र लिया गया।

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

सी.बी.आर.टी., चंडीगढ़

आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़

आंचलिक कार्यालय, देहरादून

सहभागी

स्वामी विवेकानन्द-उद्धरण

- उठो, जागो और तब तक रुको नहीं, जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए।

- जो सत्य है, उसे साहसपूर्वक निर्भीक होकर लोगों से कहो-उससे किसी को कष्ट होता है या नहीं, इस ओर ध्यान मत दो। दुर्बलता को कभी प्रश्रय मत दो। सत्य की ज्योति 'बुद्धिमान' मनुष्यों के लिए यदि अत्यधिक मात्रा में प्रखर प्रतीत होती है और उन्हें बहा ले जाती है, तो ले जाने दो-वे जितना शीघ्र बह जाएं उतना अच्छा ही है।

- तुम अपनी अंतर-आत्मा को छोड़ किसी और के सामने सिर मत झुकाओ। जब तक तुम यह अनुभव नहीं करते कि तुम स्वयं देवों के देव हो, तब तक तुम मुक्त नहीं हो सकते।

- ईश्वर ही ईश्वर की उपलब्धि कर सकता है। सभी जीवंत ईश्वर हैं-इस भाव से सब को देखो। मनुष्य का अध्ययन करो, मनुष्य ही जीवन्त काव्य है। जगत में जितने ईसा या बुद्ध हुए हैं, सभी हमारी ज्योति से ज्योतिष्मान हैं। इस ज्योति को छोड़ देने पर ये सब हमारे लिए और अधिक जीवित नहीं रह सकेंगे, मर जाएंगे। तुम अपनी आत्मा के ऊपर स्थिर रहो।

- ज्ञान स्वयमेव वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका अविष्कार करता है।

- मानव-देह ही सर्वश्रेष्ठ देह है, एवं मनुष्य ही सर्वोच्च प्राणी है, क्योंकि इस मानव-देह तथा इस जन्म में ही हम इस सापेक्षित जगत् से संपूर्णतया बाहर हो सकते हैं-निश्चय ही मुक्ति की अवस्था प्राप्त कर सकते हैं और यह मुक्ति ही हमारा चरम लक्ष्य है।

- जो मनुष्य इसी जन्म में मुक्ति प्राप्त करना चाहता है, उसे एक ही जन्म में हजारों वर्ष का काम करना पड़ेगा। वह जिस युग में जन्मा है, उससे उसे बहुत आगे जाना पड़ेगा, किंतु साधारण लोग किसी तरह रेंगते-रेंगते ही आगे बढ़ सकते हैं।

- आध्यात्मिक दृष्टि से विकसित हो चुकने पर धर्मसंघ में बना रहना अवांछनीय है। उससे बाहर निकलकर स्वाधीनता की मुक्त वायु में जीवन व्यतीत करो।

- पहले स्वयं संपूर्ण मुक्तावस्था प्राप्त कर लो, उसके बाद इच्छा करने पर फिर अपने को सीमाबद्ध कर सकते हो। प्रत्येक कार्य में अपनी समस्त शक्ति का प्रयोग करो।

- किसी बात से तुम उत्साहहीन न होओ, जब तक ईश्वर की कृपा हमारे ऊपर है, कौन इस पृथ्वी पर हमारी उपेक्षा कर सकता है?यदि तुम अपनी अंतिम साँस भी ले रहे हो तो भी न डरना। सिंह की शूरता और पुष्प की कोमलता के साथ काम करते रहो।

- लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा, लक्ष्मी तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो, तुम्हारा देहान्त आज हो या एक युग में, तुम न्यायपथ से कभी भ्रष्ट न हो।

खुद वो बदलाव बनिए जो आप दूसरों में देखना चाहते हैं।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय

का आंचलिक कार्यालय कोलकाता का दौरा

श्री जतिन्दरबीर सिंह (आई.ए.एस.) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का स्वागत करते हुए
श्री अशोक कुमार सिन्हा, आंचलिक प्रबंधक कोलकाता।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय आंचलिक कार्यालय कोलकाता के अधीन शाखाओं के शाखा प्रभारियों को संबोधित करते हुए।

श्री अशोक कुमार सिन्हा, आंचलिक प्रबंधक, कोलकाता शाखा प्रभारियों को संबोधित करते हुए।

श्री जतिन्दरबीर सिंह (आई.ए.एस.) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, आंचलिक कार्यालय, कोलकाता के कर्मचारियों से मिलते हुए।

पंजाबी कार्यशाला

बैंक के पंजाब राज्य में स्थित विभिन्न आंचलिक कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के अतिरिक्त पंजाबी भाषा में भी कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। पंजाबी कार्यशालाओं की कुछ झलकियाँ।

आंचलिक कार्यालय, अमृतसर

आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़

आंचलिक कार्यालय, गुरदासपुर

आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़

आंचलिक कार्यालय, पटियाला

सहभागी

अपनी बुराई को अपने से पहे ही मर जाने दें।

हिंदी कार्यशाला

आंचलिक कार्यालय, देहरादून

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

आंचलिक कार्यालय, पटियाला

आंचलिक कार्यालय, हरियाणा

आंचलिक कार्यालय, फरीदकोट

आंचलिक कार्यालय, लखनऊ

आंचलिक कार्यालय, मुम्बई

सहभागी

गतिविधियाँ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल की 60वीं छमाही समीक्षा बैठक

नराकास, करनाल के अध्यक्ष श्री ए. के. श्रीवास्तव, श्री शिव कुमार गुप्ता राजभाषा प्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, हरियाणा को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कृत करते हुए।

नराकास, करनाल द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में बैंक कार्मिक को नराकास अध्यक्ष श्री ए. के. श्रीवास्तव पुरस्कृत करते हुए।

सी.बी.आर.टी. चंडीगढ़ द्वारा 'अग्रिमों' पर विशेष कार्यक्रम

प्रधान कार्यालय, मानव संसाधन विकास विभाग के महाप्रबंधक ने सहभागियों को संबोधित करते हुए। चित्र में दाएं से बाएं मंचासीन हैं : दाएँ से श्री रमिंदरजीत सिंह, आं. प्रबंधक, चण्डीगढ़, श्री डी. डी. शर्मा, महाप्रबंधक (मा.सं.वि.) श्री एस. पी. एस. कोहली, महाप्रबंधक, स्थानीय प्रधान कार्यालय, चण्डीगढ़ तथा सी.बी.आर.टी. के प्रधानाचार्य श्री एन. पी. सिंह।

श्री एस. पी. एस. कोहली महाप्रबंधक स्थानीय प्रधान कार्यालय, चंडीगढ़ सहभागियों को संबोधित करते हुए चित्र में दृश्यमान है। उनकी दाँई ओर मंचासीन है - श्री डी. डी. शर्मा महाप्रबंधक (मा.सं.वि.वि.), श्री रमिंदरजीत सिंह, आं. प्रबंधक, चण्डीगढ़ और उनकी बाँई ओर मंच पर नज़र आ रहे हैं - सी.बी.आर.टी. के प्रधानाचार्य श्री एन. पी. सिंह।

प्रतीक चिह्न और उनका महत्व

जगमोहन सिंह मक्कड़

किसी भी संस्था का प्रतीक चिह्न उस संस्था की विचारधारा या उसके विज़न को व्यक्त करता है। प्रतीक चिह्न को देखते ही उस संस्था का पूरा विवरण दिमाग में कौंध जाता है, जैसे उस संस्था का नाम क्या है?संस्था सरकारी है या अर्ध सरकारी, निजी क्षेत्र से है अथवा कोई एनजीओ आदि-आदि। प्रतीक चिह्न "लोगो" यह भी दर्शाता है कि संस्था किस क्षेत्र से जुड़ी है। अर्थात वित्तीय क्षेत्र से है या ऑटो, टैक्सटाइल, इन्फ्रास्ट्रक्चर से या खान-पान से। प्रतीक चिह्न यह भी परिलक्षित करता है कि संस्था के निवेशक कौन हैं, उनका क्या बैक ग्राउंड है और क्या विज़न है। प्रतीक चिह्न देखते ही इन सभी प्रश्नों के उत्तर, देखने वालों के दिमाग में कौंध जाते हैं।

19वीं शताब्दी में लोग अपनी परंपरागत खेती-बाड़ी छोड़कर उद्योगों की ओर आकृष्ट हुए। इसके साथ ही उद्योगों का तीव्रगति से विकास होने लगा और इसी के साथ प्रतिस्पर्धा के युग का सूत्रपात भी हुआ। उस प्रतिस्पर्धा में टिकने के लिए कंपनियों और संस्थाओं ने अपने उत्पादों/सेवाओं आदि की पहचान बढ़ाने के लिए विज्ञापनों का सहारा लेना शुरू किया। फिर धीरे-धीरे आगे चलकर उन विज्ञापनों में अपनी संस्था के बारे में विस्तार से लिखने के साथ-साथ एक चिह्न का प्रयोग किया जाने लगा जो एक तरह से विभिन्न रेखाचित्रों के रूप में ही था। 1876 में सबसे पहला लोगो बीयर बेचने वाली कंपनी का ट्रेड मार्क के रूप में रजिस्टर किया गया।

कहना न होगा कि किसी भी संस्था का प्रतीक चिह्न एक किस्म का रिश्ता बनाता है, अपने स्टाफ सदस्यों से, अपने ग्राहकों से, अपने प्रबंध तंत्र से या फिर उससे जो किसी भी सूरत में उससे जुड़ा हुआ होता है। यहाँ तक कि प्रतीक चिह्न उन लोगों से भी एक रिश्ता बनाता है जो संस्था से सीधे तौर पर नहीं भी जुड़े होते। जैसे कि चार सर्कल्स का अर्थ है ऑडी गाड़ी से है भले ही मैं उससे न जुड़ा हुआ हूँ, फिर भी इतना तो है कि चार चक्र देखने के बाद ऑडी लिखा हुआ देखने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। इसी प्रकार का एक खास ढंग का प्रतीक चिह्न देखकर हुंडई का और प्रतीक चिह्न देखकर मारुति का ख़्याल आ जाता है। इसी प्रकार खान-पान के लिए जैसा प्रतीक चिह्न देखकर मैक डोनाल्ड का प्रतीक चिह्न देखकर डॉमिनो पिज्जा का और प्रतीक चिह्न देखकर पंजाब एंड सिंध बैंक की ओर बरबस ही ध्यान आकृष्ट हो जाता है। कुछ कंपनियों ने तो अपने नाम/उत्पाद को ही एक ख़ास अंदाज़ में लिखकर उसे ही प्रतीक चिह्न के रूप में प्रस्तुत कर दिया है जैसे AMWAY। आपने एच.एम.वी. का प्रतीक चिह्न (कुत्ता) देखा होगा और सिंडिकेट बैंक का पुराना प्रतीक चिह्न भी कुत्ता ही था। फिर भी प्रतीक चिह्न से ही पता चल जाता है कि ये किस संस्था का है।

विशेषकर उस संस्था के साथ जुड़े हुए सभी लोग प्रतीक चिह्न को देखकर गर्व महसूस करते हैं व अपनापन महसूस करते हैं। वे चाहे निवेशक हों या कर्मचारी, ग्राहक हों या वित्तपोषक। प्रतीक चिह्न एक तरह से लोगों के दिमाग में भावनात्मक पहचान का दायरा बढ़ाता है। कहना ग़लत न होगा कि प्रतीक चिह्न ब्रांड इमेज का ही एक दूसरा रूप होता है।

प्रतीक चिह्न का विकास/साज सजावट करने वाली संस्थाओं ने लोगों के दिमाग में अपनी एक ख़ास जगह बनाने के लिए कई तरह के प्रयोग करने शुरू कर दिए जैसे, किस तरह का डिज़ाइन हो, किस तरह की लिखावट हो और उसमें किन रंगों का और किस तरह से प्रयोग किया जाए क्योंकि हर रंग कुछ कहता है।

आखिर अलग-अलग रंगों का क्या महत्व है, और वे लोगों के दिल-ओ-दिमाग पर क्या असर डालते हैं, इसे हम इस प्रकार समझ सकते हैं।

लाल रंग :

प्रेम, शक्ति, उत्साह, जोश, ताकत और जुनून को प्रदर्शित करता है और सबसे अधिक आकर्षित करता है।

पीला रंग :

उम्मीद, विकास, प्रसन्नता व संतुष्टि की अनुभूति कराता है। यह रंग संपर्क, संचार, सूचना, संदेश व गर्मजोशी को प्रदर्शित करता है और आशावादी मानसिकता को दर्शाता है।

नीला रंग :

आसमान व समुद्र का प्रतिनिधित्व करता है जो साफ सफाई, दृढ़ विश्वास व सुरक्षा का अहसास दिलाता है। यह रंग मन को शांति प्रदान करता है और उत्पादन क्षमता बढ़ाता है। इसीलिए कार्यालयों में प्रायः नीले रंग का प्रयोग अधिक किया जाता है।

नारंगी रंग :

ऊर्जा का स्रोत है, उत्तेजना व गर्मजोशी को बढ़ाता है। यही कारण है कि दुकानदार नारंगी रंग का प्रयोग अधिक करते हैं।

हरा रंग :

हरियाली को प्रदर्शित करता है। इसे सेहत के साथ-साथ अच्छे भाग्य का प्रतीक भी माना जाता है। यह रंग संस्थागत गठन, शांति व धीरज को बढ़ावा देता है व धन संपत्ति के विकास का प्रतिनिधित्व करता है। अक्सर धनी लोग या वित्तीय संस्थाएं इस रंग का अधिक प्रयोग करती हैं।

जामुनी रंग :

गौरव, प्रतिष्ठा, गरिमा और मर्यादा को प्रदर्शित करता है तथा विकसित बुद्धिमता व ऐश्वर्य का भी प्रतीक माना जाता है।

काला रंग : विभाजित व्यक्तित्व, छल कपट व शक्ति को दर्शाता है। विरोध प्रदर्शन करने के लिए इस रंग का प्रयोग किया जाता है। यह रंग नीरसता तथा दुष्कर्म का भी प्रतीक है। रावण को काले कपड़ों में इसीलिए दिखाया जाता है।

सफेद रंग : स्वच्छता, सादगी व शुद्धता का प्रतीक है किंतु इस रंग को प्रयोग करने के लिए हमें किसी न किसी रंग की बैकग्राउंड का सहारा लेना पड़ता है। इसलिए इस रंग को बहुत ही सोच समझकर प्रयोग में लाया जाना चाहिए।

गुलाबी रंग : मस्ती व मनोरंजन का प्रतीक है। खेलों व मन को चंचल/चुलबुला करने वाला नखरेबाज भी माना जाता है।

भूरा रंग : मिट्टी का प्रतीक है। यह फुर्तीला, बलवान, साहसी, लक्ष्यार्थ व गुणों से भरपूर माना जाता है। इस रंग को अक्सर ग्रामीण जीवन को दर्शाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

प्रतीक चिह्न के साथ-साथ कंपनियों/संस्थाओं द्वारा विभिन्न पंच लाइन्स (आदर्श-वाक्य) का भी प्रयोग किया जाने लगा और भारत में हिंदी की पंच लाइन्स ने तो अपना अलग ही स्थान बना लिया जैसे 'सस्ता नहीं... सबसे अच्छा' बांगर सिमेंट, 'डर के आगे जीत है, इयू', 'जहां सेवा ही जीवन ध्येय है' : पंजाब एंड सिंध बैंक, 'इससे सस्ता और अच्छा कहीं नहीं-, बिग बाज़ार के लिए प्रयोग की गई। आगे चलकर भाषा के साथ-साथ रंगों का भी ख़ास ध्यान रखा जाने लगा। अलग-अलग रंग, अलग-अलग लोगों के दिमाग में अपना प्रभाव अलग ढंग से डालते हैं और उनका अपना ही महत्व होता है। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हर रंग कुछ कहता है। या हर दीवार कुछ कहती है।

हमारे बैंक का प्रतीक चिह्न

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)
जहाँ सेवा ही जीवन ध्येय है।
Where service is a way of life

हमारे बैंक के प्रतीक चिन्ह को बनाने के लिए उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर तीन रंगों का प्रयोग किया गया है, ताकि प्रतीक चिन्ह लोगों के मन व दिमाग पर सकारात्मक छवि बना सके तथा भावनात्मक जुड़ाव के दायरे को बढ़ाए, जिससे अधिक से अधिक लोग बैंक की ओर आकर्षित हों जैसे कि हरे रंग की बेकग्राउंड (संस्थागत गठन, शांति, धीरज व धन संपत्ति का विकास) का प्रयोग करते हुए पीले रंग में (विकास, प्रसन्नता व संतुष्टि और आशावादी मानसिकता) बैंक का नाम हिंदी व अंग्रेज़ी में लिखा गया है। बैंक के चिह्न में प्रयुक्त पीले रंग का बेस विकास, प्रसन्नता व संतुष्टि और संपर्क, संचार, सूचना, संदेश व गर्मजोशी को प्रदर्शित करने के साथ-साथ आशावादी मानसिकता को भी दर्शाता है और पीले के ऊपर लाल रंग से बना चिह्न प्रेम, शक्ति, उत्साह, जोश, ताकत और जुनून को प्रदर्शित करता है और सबसे अधिक आकर्षित करता है, ताकि चिह्न लोगों के मन व दिमाग पर सकारात्मक छवि बना सके तथा भावनात्मक जुड़ाव के दायरे को बढ़ाए, जिससे अधिक से अधिक लोग बैंक की ओर आकर्षित हों।

प्रतीक चिह्न को बनाने के लिए अंग्रेज़ी के तीन अक्षरों PSB का भी प्रयोग किया गया है। P के ऊपर S रखा गया है ( ) व छोटे b को P के साथ जोड़कर ( ) लिखा गया है। सबसे महत्वपूर्ण बात S अक्षर को ऊपर आसमान की ओर उठा ( ) रखा है। जो यह दर्शाता है कि बैंक के इरादे बहुत ही मज़बूत हैं, उसका लक्ष्य आसमान की ऊँचाइयों को छूने का है जिसकी कोई सीमा नहीं है। यह बैंक के विज़न डॉक्यूमेंट में भी झलकता है कि बैंक को देश का सबसे मज़बूत व नई तकनीक से युक्त सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक बनाएंगे, जो सभी हितधारकों, ग्राहकों व कर्मचारियों की अपेक्षाओं को पूरा करने वाला बैंक है। इसमें प्रयुक्त हरा रंग धन संपदा व अच्छे भाग्य का प्रतीक है और पीला रंग उम्मीद, विकास, प्रसन्नता और संतुष्टि का प्रतीक है व संदेश व आपसी संचार को बढ़ावा देता है। सबसे बड़ी बात यह है कि लाल रंग प्यार, शक्ति, उत्साह, जोश, ताकत और जुनून को प्रदर्शित करता है और सबसे अधिक आकर्षित करता है। ब्याह शादी में दूल्हा, दुल्हन के कपड़े अधिकतर लाल रंग में बनवाए जाते हैं ताकि लोगों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो।

एक और बात महत्वपूर्ण है कि इस चिह्न को सिख धर्म के प्रतीक के साथ भी जोड़कर देखा जाता है जो इस बात को दर्शाता है कि कोई भी कार्य करने से पहले भगवान को याद करना चाहिए।

बैंक के प्रतीक चिह्न के नीचे बैंक के संक्षेपाक्षरों को हिंदी में लिखा गया है जो राजभाषा हिंदी के प्रावधानों के साथ-साथ भारतीयता का भी परिचायक है। यह लिखते हुए बनाने वालों के दिमाग में शायद 'पूर्ण सेवा भाव' (पीएसबी) की बात भी रही होगी। इसी बात को तथा इस विश्वास को दर्शाती हुई प्रतीक चिह्न के नीचे एक पंक्ति 'Where service a way of life' ('जहाँ सेवा ही जीवन ध्येय है') भी लिखी गई है। पंजाबी में लिखा गया है 'सेवक को सेवा बण आई' श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना संख्या 292 राग गऊड़ी में श्री गुरु अर्जन देव जी ने लिखा है कि ''सेवक को सेवा बन आई'' "The Servant's purpose is to serve" यानि कि बिना फल की इच्छा के कार्य करते रहो, भगवान उसका फल अवश्य देगा। गीता में भी भगवान श्री कृष्ण ने दोहराया है कि हे मनुष्य! बिना फल की इच्छा किए अपना कर्म करते रहो। भगवान को आपकी चिंता है और वह उसका फल अपने आप देगा।

हमारे प्रतीक चिह्न को बनाते हुए बड़ी ही संजीदगी से रंगों व लिखावट का प्रयोग किया गया है कि बैंक आसमान की ऊँचाइयों को छूने की ओर अग्रसर है और इसमें ग्राहक सेवा पर भी अधिक ध्यान दिया गया है। पूर्ण सेवा भाव, सेवक को सेवा बन आई आदि शब्दों का प्रयोग करके बैंक के ब्रांड चिह्न को बनाया गया है।

आइए, हम भले ही बैंक के निवेशक हों, या ग्राहक हों, अधिकारी हों या कर्मचारी हों, बैंक के प्रतीक चिह्न को देखकर गर्व महसूस करें तथा अधिक से अधिक भावनात्मक रूप से जुड़ने की कोशिश करें और इसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए सतत् प्रयास करें।

- पूर्व वरिष्ठ प्रबंधक

बैंकिंग ऑम्बड्समेन (लोकपाल)

त्रिलोचन सिंह

बैंकिंग ऑम्बड्समेन अर्थात् बैंकिंग लोकपाल। साधारण भाषा में लोकपाल का अर्थ है - लोगों की बात सुनने वाला व्यक्ति। वर्तमान में भी, यदि कोई भी साधारण व्यक्ति अपने मामले/विवाद को सुलझाने के लिए कोर्ट कचहरी की शरण लेगा, तो उसे बीसियों वर्ष अपने छोटे से मामले को सुलझाने के लिए लग जाएंगे। साथ ही मामले को सुलझाने के लिए एक ओर समय तथा धन की बर्बादी होगी तथा दूसरी ओर मानसिक परेशानियों तथा शारीरिक यातनाओं का सामना करना पड़ेगा। हमने अक्सर अपने बड़े-बूढ़ों से सुना होगा कि यदि कोई भी व्यक्ति अपना विवाद विशेषकर जमीन-जायदाद इत्यादि के मामले में न्यायालय में केस करते हैं तो कभी-कभी दादा जी द्वारा दाखिल किए गए केस में उसका पुत्र या पोता ही फैसला/न्याय पाता है। न्यायिक व्यवस्था की जटिलताएँ/एक न्यायालय से दूसरे उच्च न्यायालय में उसकी अपील, तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करना आदि से एक साधारण व्यक्ति के धन की बर्बादी के साथ-साथ उसका जीवन ही सम्पूर्ण रूप से अस्त-व्यस्त हो जाता है। उसके बाद आपके द्वारा चुने गए वकील महोदय के गुण, तजुर्बा तथा आपके केस में ली गई रुचि/जानकारी इत्यादि आपके केस को सही दिशा में मोड़ने के लिए उचित साबित होगी। एक ओर केस लड़ने के फलस्वरूप आपका जीवन व्यतीत होने के साथ-साथ शारीरिक तथा मानसिक परेशानियों में वृद्धि होती रहती है तथा दूसरी ओर तारीख पर तारीख आपको न्यायालय के चक्कर काटने के लिए विवश कर देती है। इन सभी समस्याओं के देखते हुए भारत सरकार ने एक मध्यस्थ के रूप में ऑम्बड्समेन की शुरूआत की है। जो एक अंधे-न्यायिक संस्था है। आज आयकर विभाग, बीमा तथा बैंकिंग विभाग में इसका प्रचलन काफी बढ़ गया है।

कोई भी साधारण व्यक्ति बैंकिंग के संबंध में किसी भी समस्या/विवाद के लिए ऑम्बड्समेन को अपना लिखित आवेदन दे सकता है। आवेदन देने से पहले निम्न जानकारियाँ देनी आवश्यक हैं? आम जनता से प्राप्त शिकायतें/समस्याओं को निम्न तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

1. बैंक जमाओं के संबंध में प्राप्त शिकायतें/अनियमितताओं के अंतर्गत आवेदन प्राप्त किए जा सकते हैं जिनमें से मुख्य निम्नानुसार हो सकती हैं :-

1. चैकों, ड्राफ्टों तथा बिलों/चैकों की उगाही में बैंक की ओर से की गई अनियमतताओं/विलम्ब के संबंध में।
2. बैंकिंग कामकाज के संबंध में निर्धारित समय के पालन न करने के संबंध में।
3. देश में प्रचलित सिक्कों के लेन-देन के संबंध में।
4. कम मूल्य के नोटों को स्वीकार न करने के संबंध में।
5. लिखित रूप में वचन के रूप में दी गई बैंकिंग सेवाओं को उपलब्ध न करना अथवा बैंकिंग सेवाओं में विलम्ब करना।
6. अनिवासी भारतीयों के रखे खातों के प्रचलन के संबंध में की गई शिकायत।
7. बैंक के ग्राहक को बिना प्रयास सूचना अथवा कारण के खातों को बंद करना।
8. खाता बंद करने के आदेशों के बावजूद अनावश्यक विलम्ब।

9. आचार संहिता का पालन न करना।

10. सरकारी प्रतिभूतियाँ ज़ारी करने संबंधी दिशा-निर्देशों का पालन न करना।

11. वसूली ऐजण्टों के लिए ज़ारी दिशा-निर्देशों का पालन न करना।

12. ग्राहकों को प्रयास सूचना दिए बिना ही प्रभार इत्यादि लगाना।

2. ऋणों के संबंध में प्राप्त शिकायतें/अनियमितताओं के अंतर्गत आवेदन प्राप्त किए जा सकते हैं जिनमें से मुख्य निम्नानुसार हो सकती हैं :-

1. ब्याज दरों के संबंध में भारतीय रिज़र्व बैंक के दिशा-निर्देशों का पालन न करना।

2. मंजूरी संवितरण में विलम्ब।

3. आवेदन के लिए प्राप्त ऋणों को निर्धारित समय-सीमा में मंजूरी न देना।

4. बिना किसी कारण बताए आवेदन को लौटा देना।

5. उधार-कर्त्ताओं के लिए निष्पक्ष आचार-संहिता का पालन न करना।

6. वसूली ऐजण्टों के लिए जारी दिशा-निर्देशों का पालन न करना।

3. बैंक द्वारा प्रदान की जाने वाली सहायक सेवाओं के संबंध में शिकायतें या अनियमितताओं के अंतर्गत आवेदन प्राप्त किए जा सकते हैं जिनमें से मुख्य निम्नानुसार हो सकती हैं :-

1. ए.टी.एम./डेबिट कार्ड/क्रेडिट कार्ड के संबंध में भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन न करना।

2. बैंक द्वारा किराए पर दिए गए लॉकर के संबंध में शिकायतें।

3. टैक्स वसूली, सरकारी एजेन्सियों की विभिन्न सेवाएं जैसे पानी, बिजली, टेलीफोन इत्यादि के बिलों की उगाही, आवास/प्लाट आवंटन आवेदन/ऋण के संबंध में, इत्यादि।

4. अन्य कोई भी बैंकिंग सेवा।

विभिन्न बैंकिंग लोकपाल न केवल साधारण जनता/प्रतिष्ठानों से शिकायतें स्वीकार करते हैं अपितु बैंकिंग सेवाओं के विरुद्ध भारतीय रिज़र्व बैंक तथा केन्द्रीय सरकार से प्राप्त शिकायतों पर भी विचार किया जाता है। बैंकिंग लोकपाल द्वारा इन शिकायतों/विवादों का आवेदन निःशुल्क तभी स्वीकार्य होगा जब मामले की स्थिति निम्नानुसार होगी :-

1. शिकायतकर्त्ता ने संबंधित बैंक को लिखित शिकायत की हो तथा उसकी शिकायत पर विचार करने से मना कर दिया गया हो/एक महीने तक कोई लिखित जवाब न भेजा गया हो/खारिज कर दी गई हो।

2. शिकायतकर्त्ता अपनी शिकायत की प्रार्थना-पत्र पर कोई उत्तर न मिलने पर आवेदन की तिथि से एक वर्ष एक महीने तक तथा उत्तर मिलने के बावजूद संतोषजनक कार्रवाई न होने की दशा में उत्तर मिलने के एक वर्ष तक लिखित में शिकायत कर सकता है।

3. आवेदक द्वारा दी गई शिकायत का मामला किसी फोरम, न्यायालय या मध्यस्थ के सम्मुख लम्बित नहीं होना चाहिए।

अंत में कहा जा सकता है कि आज साधारण से साधारण नागरिक से लेकर देश के बड़े-बड़े बुद्धिजीवियों तक सभी को बैंकिंग सेवाओं की आवश्यकता है तथा सभी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से बैंक से जुड़े हुए हैं। उनकी बैंक में जमा राशि के संबंध में, बैंक से लिए गए ऋणों के संबंध में अथवा बैंकिंग सेवाओं से संबंधित किसी भी समस्या के कम से कम समय में निवारण के लिए बैंक लोकपाल मौजूद है जो आपकी न्यायोचित समस्या पर विचार करते हुए अपना निर्णय देते हैं जिसे बैंक सामान्यतः स्वीकार करता है, यदि इसके बावजूद भी दोनों पक्षों में से कोई पक्ष लोकपाल के दिए गए निर्णय से संतुष्ट नहीं हैं तो वह अपना पक्ष रखने के लिए इसकी अपील एक नियत अवधि तक इससे आगे उच्च अधिकारियों को भी कर सकता है व अपना पक्ष रख सकता है। इस प्रकार, वर्तमान भारतीय अर्थव्यवस्था के बैंकिंग उद्योग में एक संजीवनी की तरह कार्य कर रहा है जिससे बैंक से जुड़ी समस्याओं का समाधान सामान्य से सामान्य नागरिक को भी मिल रहा है। बैंकिंग लोकपाल के पास देश भर से प्राप्त शिकायतों में लगातार अभूतपूर्व बढ़ोतरी हो रही है। जिससे उसकी सफलता का आंकलन किया जा सकता है तभी तो कोई भी साधारण नागरिक बैंकिंग ऑम्बड्समेन की वेबसाईट पर जाकर ऑन-लाईन शिकायत भी दर्ज कर सकता है तथा अपनी बैंकिंग से जुड़ी समस्या का निवारण कर सकता है।

- प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

अधिकारी बाबू

प्रतीक गोयल

प्रतिदिन की तरह भारी ट्रैफिक के बीच में साढ़े नौ बजे बैंक पहुँचा। जब मैं शाखा के बाहर पहुँचा तो वहाँ पर कुछ लोग फटे पुराने कपड़ों में बैठे हुए थे। मेरे गेट के पास पहुँचते ही एक व्यक्ति उठकर आया और बोला ''साहब परनाम! हम है रमेश करीबन दो महीने पहले आया था खाता खुलवाने के लिए। साहब आपने कहा था ना कि अपने जान-पहचान वालों के भी खाते खुलवाना। आज उन्हीं को साथ लाया हूँ खाता खुलवाने के लिए। इस स्थिति को देखकर गरीबी तथा मेहनत मजदूरी क्या होती है, इसके बारे में अनुमान लगाया जा सकता था।

उस समय मन ही मन में मैं सरकार द्वारा लागू की गई प्रधानमंत्री जन-धन योजना तथा वित्तीय समावेशन आदि के बारे में सोच रहा था। जिसका मुख्य उद्देश्य उन गरीब लोगों, मजदूर, किसान या ऐसे अन्य लोगों को जीरो बैलेंस पर बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध करवाना है जो बैंकिंग की इन सुविधाओं से वंचित है। प्रधानमंत्री जन-धन योजना का मुख्य उद्देश्य भी लोगों को बैंक से जोड़ना तथा बीमा सुविधा उपलब्ध करवाना है।

मैं रमेश को अपने साथ अंदर ले गया और उसे अपने सामने की कुर्सी पर बैठाया। अपने रोज़मर्रा के आवश्यक कामों को पूरा करते हुए मैं अपनी टेबल पर पहुँचा। रमेश से बातें करते-करते मुझे पुरानी बातें याद आने लगीं। जब वह पहली बार बैंक में आया था तो वह सहमते हुए मेरे पास आया था। और मुझे परनाम करते हुए कहने लगा ''साहब मुझे खाता खुलवाना है! हम फार्म भरना नहीं जानते और हमारी कोई मदद भी नहीं कर रहा। हमारी मदद कर दो साहब''। तब मैंने उसे बैठने के लिए कहा और उसके जरूरी डाक्यूमेन्ट्स देखने लगा। और डाक्यूमेन्ट्स देखने के बाद उसका खाता खोलने का फार्म भर दिया। मैंने देखा कि सभी लोग अपने-अपने कार्यों में व्यस्त थे। पर मन ही मन दुख इस बात का था कि बार-बार कहने पर भी किसी ने उसकी मदद नहीं की। फिर मैंने उसके लिए चाय मंगवाई। तथा खाता खोलने की प्रक्रिया को शुरू किया।

खाता खोलने के बाद मैंने रमेश को पास बुक उपलब्ध करवाई। पास बुक लेने के बाद वह हाथ जोड़ने लगा तो मैंने उसे ऐसा करने से रोका। नया खाता खुलने पर वह काफी खुश था। और मुझसे कहने लगा कि और लोगों को भी खाता खोलने के लिए लेकर आएगा। हामी भरते हुए मैंने उसे अन्य सावधि योजनाओं तथा अन्य ऋण योजनाओं के बारे में भी बताया। इन लोगों की मदद करते हुए मन को काफी खुशी मिली।

रमेश के बोलने पर मैं भूतकाल से वर्तमान में आया और मैंने शाखा प्रबंधक श्री पवन कुमार कुशवाहा के साथ मिलकर 25-30 खाते खोले तथा उन्हें पास बुक उपलब्ध करवाई।

कौन है यह रमेश ?उसका मेरा क्या नाता है ?कुछ दिन पहले तक मैं उसे जानता भी नहीं था, पर आज वह मेरे काम-काज का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया था। मन ही मन मैं काफी खुश था। जिन्हें हम लोग सामान्य समझते हैं, वही लोग अनोखा कार्य कर जाते हैं।

समाज और राष्ट्र के विकास के लिए सभी को योगदान देना होगा तथा सबको साथ-साथ चलना होगा। सभी लोगों को इससे जुड़ना होगा तथा अन्य लोगों को भी जोड़ना होगा। सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन ही राष्ट्र तथा विश्व के विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है।

- शाखा-बहादुरगढ़, हरियाणा।

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा स्टाफ़ सदस्यों के लिए समय-समय पर आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों की झलकियाँ

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रधान कार्यालय के विभिन्न विभागों के स्टाफ़ सदस्यों के लिए एक दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्री कुलदीप सिंह खुराना, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा विभाग, सहभागियों को संबोधित करते हुए। बाएँ से मंचासीन हैं सुश्री उषा किरण, उप महाप्रबंधक, आई.डी.बी.आई. बैंक, श्री आर. सी. नारायण, पूर्व महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री राजिंदर सिंह बेवली, मुख्य प्रबंधक एवं प्रभारी, राजभाषा विभाग।

श्री राजिंदर सिंह बेवली, मुख्य प्रबंधक एवं प्रभारी, राजभाषा विभाग, सहभागियों को संबोधित करते हुए।

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा कंप्यूटर पर यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बाएँ से मंचासीन हैं श्री राजिंदर सिंह बेवली, मुख्य प्रबंधक एवं प्रभारी राजभाषा विभाग, श्री एस. पी. एस. कलसी, पूर्व प्रधानाचार्य, स्टाफ़ ट्रेनिंग कॉलेज, श्री कुलदीप सिंह खुराना, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा विभाग।

डॉ. नीरू पाठक, प्रबंधक, राजभाषा विभाग, सहभागियों को संबोधित करते हुए।

उभरते हुए कवि को यूँ न मरने दो

दर्शन सिंह

कविताएं सुन सुन
हमारे एक करीबी दोस्त को
शेरो-शायरी व ग़ज़ल रचने का शौक चर्राया
लगा तावड़ तोड़ लिखने
मस्ती का यह आलम कि
अपने भी पराये लगे दिखने
उसकी इस हरकत पर घर का माहौल गर्माया.....
मस्त रहा वह अपने में, उसने ना गौर फर्माया.... ।

हुई लिख-फाड़... लिख फाड़
रहता अब कर बंद किवाड़
घरवाले कभी झिर्रियों से झाँकते
कभी अधखुली खिड़कियों से ताकते
लिखता चंद फिकरे फिर देता फाड़
मुड़े-तुड़े कागज़ो का लगा था झाड़
हालत पे उसकी घर का हर सदस्य सकपकाया.....
मस्त रहा वह अपने में, उसने ना ग़ौर फर्माया.... ।

(पत्नी को)
उसके बाहर जाने पर अब डर है सताने लगा
टटोलने पर, जेब में कवि सम्मेलनों... मुशायरों के
अनगिनत निमंत्रण पत्रों का अंबार जो मिला,
अब पता चला.....
क्यों इत्ती-इत्ती देर से घर वापिस आते हैं,
चंद फिकरे सुना दफ़्तर पर बेज़ा खफा होते हैं
पहले कभी फल-फ्रूट.. सब्ज़ी-भाजी ले आते थे
थैला पकड़ाते हाथ शरीर छू जाता तो मुस्कुराते थे,
इस बाबत अब पूछो तो अंगार से तमतमाते हैं
उजड़ा चेहरा... ना जाने कहाँ-कहाँ की धूल फांकते हैं
उसके इस अप्रत्याशित चलन पर हर कोई झल्लाया....
मस्त रहा वह अपने में, उसने ना ग़ौर फर्माया.... ।

इंतहा तो उस दिन हो गई
जब घंटी बजते ही मेन दरवाज़ा उसने खोला
खड़ी देख पड़ोसन को उसका कवि हृदय डोला,
उगल डाली ये पंक्तियाँ -
"वो आए हमारे घर यह उनकी है फ़ितरत
लाई उन्हें यहाँ कि हो ना हो हमारी किस्मत"
अवाक खड़ी पड़ोसन ताकने लगी यहाँ-वहाँ
पत्नी ने मोर्चा संभाला, देख पड़ोसन का चेहरा तमतमाया...
मस्त रहा वह अपने में, उसने ना ग़ौर फर्माया.... ।

ज्यों-ज्यों
उसका कविता...शेरो-शायरी से प्रेम ज़ोर पकड़ता जा रहा था
त्यों-त्यों
उसके सनकीपन.... दीवानेपन का मर्ज़ भी बढ़ता जा रहा था
कहीं भी कुछ भी कह देना
दीवार या अख़बार वहीं लिख लेना,
भेजना कहीं तो जाना कहीं
दूध की जगह लाना दही,
अपनों को तो था ही गिला
दूर दराज़ से भी शिकवों का शुरू हुआ सिलसिला,
बेवजह ही गुमसुम सा हो जाना
लिखने की धुन में छोड़ देना खाना,
उसको पागलपन की ओर बढ़ते देख कर अपनों का दिल घबराया....
मस्त रहा वह अपने में, उसने ना ग़ौर फर्माया.... ।

एक दिन हमारा कवि मित्र बुझा सा हो गया
जैसे बिन बाती बिन तेल का पड़ा हो दिया,
वक्त बेवक्त बुदबुदाता... गुनगुनाता.....
कभी चहचहाता... कभी कसमसाता....,
कहीं कुछ हो तो नहीं गया
किसी ने कुछ कर तो नहीं दिया,
आनन-फानन (घरवालों ने) कर्मकांड भी करवाया

कोई भी चीज़ अच्छी या बुरी नहीं होती, हमारा नज़रिया ही उसे अच्छा या बुरा बनाता है : शेक्सपियर

तो भी उसके चेहरे का अदब... नूर ना आया
एक शुभचिंतक की सलाह पर उसे अस्पताल भिजवाया...
मस्त रहा वह अपने में, उसने ना ग़ौर फर्माया.... ।

मनोचिकित्सक ने हर प्रकार परखा-जाँचा
नहीं मिला उसे कोई तीया-पांचा
कुछ रोज़ दाखिल रह आराम की सलाह दी
कवि मित्र ने भी कोई अनावश्यक हरकत नहीं की,
जवाँ हसीन नर्सों की तीमारदारी रंग लाई

जनाब की पथरायी आंखों.. सुस्त उंगलियों में हरकत आई
चिकित्सक ने अनुभवी नज़रों से भांप,
घरवालों को दी नेक सलाह...
रोका टोका ना करो बेवजह
जो करता है करने दो
जो लिखता है लिखने दो,
"एक उभरते कवि को यूं मरने ना दो" ।
"एक उभरते कवि को यूं मरने ना दो" ।।

- **शाखा रोपड़, चंडीगढ़**

दामिनी का दर्द

शिवांगी सक्सेना

चाहे समाज ने मुझे समेटा,
चाहे दुनिया ने दिया सहारा,
या चाहे मिले मुझे बूँदों का सागर,
लेकिन टूट गया अब मेरा दामन।

उस रात मैं थी खुश,
आँखों में सजाए सुरमा चली थी मैं,
अपने साथी के साथ उस रात,
अपनी दुनिया में संजोय सपने
अपने आँगन की चौखट पर,
उड़ती तितलियों की खिलखिलाहट याद कर,
मैं जीना चाहती, गगनचुंबी बन जाना चाहती।

पर था न ये नियति को मंजूर,
उस कालरात्रि की कहानी लिखी जा चुकी थी,
कौरवों ने पुनः छीननी चाही द्रौपदी की लाज,
अर्जुन को पहुँचाया मृत्यु के घाट,
लहु का झरना बहा डाला,
चीरहरण में कृष्ण आए थे बचाने पांचाली की लाज,
परंतु मेरी इज्ज़त तो थी मेरे ही हाथ।

बड़ी चिल्लाई और मार भी खाई,
परंतु उन दरिंदों ने न मानी हार,
अपना गुरूर नष्ट न हो,
इसलिए चलाए मेरी मर्यादा पर बाण,
उस रात की कहानी मैं न बता सकी,
शरीर के घाव मिट भी जाएं लेकिन,
भर न पाएंगे हृदय के भीतरी भाव,
मन में लगी चोट,
समाज में सीधे मुँह चलने का ज़ोर,
मैं अपना होश सब गंवा बैठी,
अपनी इज़्ज़त भी लुटा बैठी।

दुनिया ने दिया साथ अपना,
उन कौरवों को दिलवाई सज़ा,
आत्मविश्वास मुझमें ऐसा भरा,
अगले जन्म भी दुर्गा बनने की माँगी दुआ,
जहाँ खत्म होती है एक राह,
वहीं शुरू होता है नया चौराहा,
नए जीवन में कदम रखने
आऊंगी मैं दानवों की पीठ पर चढ़के।

बनूँगी काली, जनूँगी भवानी
करूँगी आरम्भ नया अध्याय,
पापियों का नाश करने,
असुरों का अंश मिटाने,
माँगूगी दुआ, मैं फिर आऊँगी बेटी बनके।

सुपुत्री श्री प्रमोद सक्सेना
प्रधान कार्यालय आई.टी. विभाग

बेटी बचाओ

सौम्या गुप्ता

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता"

अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा की जाती है, वहां देवता निवास करते हैं, ऐसा हमारे शास्त्रों में लिखा है। हमारे देश में तो कंजक पूजन का भी प्रचलन हैं किंतु मुझे यह बताते हुए खेद हो रहा है कि दिन-प्रतिदिन बेटियों की संख्या कम होती जा रही है और यह हमारे दोहरे चरित्र को उजागर करता है।

देश में कन्या भ्रूण हत्या एक बहुत बड़ा अभिशाप है जिसके फलस्वरूप दिन-प्रतिदिन लिंग अनुपात में अंतर बढ़ता जा रहा है। हरियाणा के 12 जिलों में इसका प्रभाव देखने को मिलता है।

शून्य (0) से लेकर 6 साल की उम्र के बीच एक हजार लड़कों के अनुपात में लड़कियों की संख्या में वर्ष 1961 से लगातार गिरावट आ रही है। वर्ष 1991 में जहाँ लड़कियों की संख्या 945 थी वहां 2001 में घट कर 927 और 2011 में 918 हो गयी है। यह बेटियों के प्रति भेदभाव का संकेत है, जो एक चिंता का विषय है।

भ्रूण हत्या एक जघन्य अपराध है। भारत में आज भी गर्भावस्था में जांच करके कन्या भ्रूण हत्या की जा रही है। माँ के गर्भ में पल रही कन्या की जब हत्या की जाती है तब वह बचने के कितने जतन करती होगी यह एक माँ से बेहतर और कोई नहीं समझ सकता। गर्भ में "माँ मुझे बचा लो" की चीख कोई ख्याली पुलाव नहीं बल्कि एक दर्दनाक हकीकत है।

वह नन्हा जीव जिसकी हत्या की जा रही है उनमें से कोई कल्पना चावला, कोई पी.टी. ऊषा, कोई स्वर कोकिला लता मंगेश्कर तथा कोई मदर टेरेसा भी हो सकती है। कल्पना चावला जब अंतरिक्ष में गई थी तब हर भारतीय को कितना गर्व हुआ था क्योंकि हमारे भारत को समूचे विश्व में एक नई पहचान मिली थी। सोचिए अगर कल्पना चावला के माता-पिता ने उनकी गर्भ में हत्या करवा दी होती तो क्या देश को यह मुकाम हासिल करने का मौका मिलता?

जिस दिन माँ-बाप को यह समझ में आ जाएगा कि बेटे और बेटी में कोई फर्क नहीं है उस दिन कन्या भ्रूण हत्या जैसी जघन्य व्याधि से हम निजात पा सकेंगे। हर माँ-बाप को यह समझना होगा कि बेटा हो या बेटी वह हमारे बच्चे हैं। अगर हम ही उनके बीच भेदभाव करेंगे तो उनका नज़रिया कैसे बदलेगा?

जीवन की हर समस्या के लिए देवी की आराधना करने वाला भारतीय समाज कन्या जन्म को अभिशाप मानता है और इस संकीर्ण मानसिकता की उपज हुई है दहेज रूपी दानव से, लेकिन दहेज के डर से हत्या जैसा घृणित और निकृष्ट कार्य कहाँ तक उचित है?

अगर कुछ उचित है तो वह है दहेज रूपी दानव का जड़ से खात्मा। एक दानव के डर से दूसरा दानविक कार्य करना एक जघन्य अपराध है और पाशविकता की पराकाष्ठा है।

लड़की के जन्मते ही उसके लिए दहेज जुटाने, उसके नैन-नक्श और रंग देखे जाते हैं। कैसे बैठना है, कैसे खड़ा होना है, कैसे चलना है, कैसे हँसना है, कैसे पहनना है - यह हिदायतें आज भी बहुत से घरों में जस की तस बनी हुई हैं। जिम्मेदारियों का वहन करना है, बाकी सदस्यों का ख्याल करना है - यह सिर्फ लड़कियों को सिखाया जाता है। ये हिदायतें नहीं, हिदायतों का हमला सरीखी है - जिनसे सीख कम डर ज्यादा पैदा होता है।

हमें अपने बच्चों को भारतीय संस्कृति सिखाने की कोशिश करनी चाहिए। कि बड़ों का सम्मान करो, छोटों के लिए आदर्श बनो। बच्चों को लड़का-लड़की में बाँटने की परंपरा को यहीं रोक दो। बहुत हो चुका। बस करें। अपने बच्चों के कोमल मानस पर बस एक ही बात टिकने दें-इंसानियत और उसकी तहज़ीब।

सरकार के द्वारा भी भ्रूण हत्या के खिलाफ सख्त कानून के तहत दण्ड का प्रावधान तो है पर इसका अनुपालन सुनिश्चित करना हम सब का नैतिक दायित्व है।

अभी हाल ही में हमारे प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" अभियान के अंतर्गत सुकन्या समृद्धि योजना की शुरूआत की गई है जो वर्तमान सरकार का जागरुक समाज के प्रति एक अच्छा प्रयास है। अभियान का उद्देश्य यह है कि लड़कियों का जन्म, पोषण और शिक्षा बिना किसी भेदभाव के हो और समान अधिकारों के साथ वह देश की सशक्त नागरिक बनें। उनके संरक्षण और सशक्तिकरण को सुनिश्चित करने के लिए समन्वित और सम्मिलित प्रयासों की आवश्यकता है।

बेटियाँ हमारे समाज का, परिवार का, राष्ट्र का गर्व हैं। बेटियाँ सृष्टि का आधार भी हैं। इसलिए समाज में उनका सम्मान होना चाहिए। बेटियों के संरक्षण से ही बेहतर समाज की कल्पना की जा सकती है।

अंत में अपने लेख को विराम देते हुए मैं कुछ पंक्तियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहूँगी :

वंश वंश करते मानव तुम,
वंश बेल ही काट रहे,
एक ही फल की चाहत में तुम,
पूरा बाग उजाड़ रहे।

फूल रहे न धरती पर तो,
फल तुम कैसे पाओगे?
अंश काटकर अपना ही तुम,
वंश कैसे बढ़ाओगे?

उम्र की ढलती शाम में जब,
बेटा खड़ा न होगा साथ,
याद करोगे अंश को अपने,
खुद मारा जिसको अपने हाथ।

ना कुचलो इन नन्हीं कलियों को,
उनको भी जग में आने दो,
बनकर फूल खिलेंगी एक दिन,
जीवन उनको पाने दो।।

बेटी बचाओ

- प्रधान कार्यालय, सतर्कता विभाग

ग्राहक सेवा एवं बैंकिंग कोड एंड स्टैण्डर्ड बोर्ड ऑफ़ इण्डिया

उत्तम कुमार शुक्ल

जमा लेना और आवश्यकतानुसार उधार देना बैंकिंग सेवा का मुख्य उद्देश्य है। बैंक की निर्भरता ग्राहक पर होती है बैंक अपने सम्मानित ग्राहक को बैंकिंग सर्विस प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध होता है ग्राहक सेवा के विभिन्न पहलुओं की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए बैंकिंग सेक्टर की एजेंसियाँ जैसे रिज़र्व बैंक ऑफ़ इण्डिया, वित्त-मंत्रालय भारत सरकार एवं स्वयं बैंक समय-समय पर विभिन्न गाइडलाइंस बनाती हैं जिनका पालन करना बैंक के लिए आवश्यक होता है इस परिप्रेक्ष्य में रिज़र्व बैंक ऑफ़ इण्डिया ने बैंकिंग कोड एंड स्टैण्डर्ड बोर्ड ऑफ़ इण्डिया का गठन किया है।

जन सेवा हेतु प्रक्रिया और कार्य निष्पादन समिति तारापोर समिति ने रिपोर्ट नं. 6 में इसके गठन की सिफारिश की है वार्षिक नीति 2008-09 के प्रस्ताव के अंतर्गत बैंकिंग कोड एंड स्टैण्डर्ड बोर्ड ऑफ़ इण्डिया का गठन 17 फरवरी, 2003 को रिज़र्व बैंक ऑफ़ इण्डिया और बैंकों के संयुक्त प्रयास द्वारा किया गया इस संस्था का गठन यूनाइटेड किंगडम में इस हेतु गठित समानांतर व्यवस्था बैंकिंग कोड से प्रेरित है। इंग्लैंड में ब्रिटिश बैंकर्स एसोसिएशन में समान संस्था बैंकिंग कोड के नाम से है जिसे इंग्लैंड के सभी बैंकों द्वारा स्वीकार किया गया है।

यह कोड बचत खाता, चालू खाता, प्रोडक्ट कार्ड एवं लोन सेवाओं, ओवर ड्राफ्ट एवं भुगतान सेवाओं तथा विदेशी विनिमय पर लागू होता है।

बैंकिंग कोड एंड स्टैण्डर्ड बोर्ड ऑफ़ इण्डिया एक स्वतंत्र और स्वायत्त प्रहरी की तरह कार्य करता है जो बैंकिंग संस्थाओं द्वारा अपने ग्राहकों के संदर्भ में कोड के अनुपालन को सुनिश्चित करता है। बोर्ड व्यक्तिगत शिकायत की सुनवाई नहीं करता है। ऐसे मामले बैंकिंग ऑम्बडसमेन की परिधि में आते हैं। जिनकी सुनवाई ऑम्बडसमेन करता है।

बैंकिंग कोड एंड स्टैण्डर्ड बोर्ड ऑफ़ इण्डिया ने 'ग्राहकों के प्रति बैंकों की प्रतिबद्धता संहिता' का नियमन किया। जिसका विमोचन रिज़र्व बैंक ऑफ़ इण्डिया के तत्कालीन गवर्नर डॉ. वाई वी रेड्डी ने 1 जुलाई 2006 को किया। इसके अंतर्गत बैंक द्वारा ग्राहक को बैंकिंग व्यवहार करते समय इसका अनुपालन करने को कहा गया।

संहिता के अनुपालन हेतु बैंकों को स्वयं को बैंकिंग कोड एंड स्टैण्डर्ड बोर्ड ऑफ़ इण्डिया में पंजीकृत करने एवं कोड को उनके बोर्ड द्वारा स्वीकार करने को कहा गया। इस कोड को स्वीकार करने के साथ ही इण्डियन बैंक एसोसिएशन द्वारा नियमित निम्नलिखित कोड्स लागू नहीं होंगे :-

1. बैंकर्स फेयर प्रैक्टिस कोड।
2. फेयर प्रैक्टिस कोड फॉर क्रेडिट कार्ड ऑपरेशन।
3. मॉडल कोड फॉर क्लेक्शन ऑफ़ ड्यूज एंड रि-पसेशन (Repossession) ऑफ़ सिक्यूरिटी।

समस्या समाधान की प्रक्रिया

बैंकिंग कोड एंड स्टैण्डर्ड बोर्ड ऑफ़ इण्डिया के सदस्य बैंकों को समस्या समाधान हेतु निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाने को कहा गया है :-

1. प्रत्येक शाखा में हेल्प डेस्क।

किसी की आलोचना करने से पहले अपनी गलतियों की ओर नजर दौड़ाएं।

2. शाखाओं के ऊपर प्रत्येक कंट्रोलिंग ऑफिस में कोड कंप्लायंस अधिकारी की नियुक्ति।

3. बैंक की प्रत्येक शाखा में संहिता अनुपालन अधिकारी का नाम एवं फोन नंबर।

4. प्रत्येक शाखा में बैंकिंग ओम्बड्समैन का नाम एवं पता प्रदर्शित करना।

ग्राहक सर्व प्रथम हेल्प डेस्क पर अपने शिकायत के समाधान के लिए पहुँचेगा। इसके पश्चात् वहां संतुष्ट न होने की दशा में कोड कंप्लायंस अधिकारी के पास जायेगा एवं वहां से संतुष्ट न होने की दशा में बैंकिंग ओम्बड्समैन के पास जाएगा।

- प्रधान कार्यालय, सामान्य प्रशासन विभाग

••••

ज़रा सोचिए

राजिंदर सिंह बेवली

सर्दियों के दिन थे। मैं बस से ऑफिस जा रहा था। बस अपनी पूरी रफ़्तार से चल रही थी। सूरज की सुबह की किरणें ठंड में बहुत ही सुकून दे रही थीं। मेरे पीछे वाली सीट पर तीन लड़कियाँ शायद किसी फिल्मी कहानी का जिक्र कर, खुश हो रही थीं।

अचानक बस एकदम धीमे हो गई। शायद आगे कोई एक्सीडेंट था। कुछ लोग उठ कर एक ओर देखने लगे। बस धीरे-धीरे आगे बढ़ी। देखा, कोई मोटर साइकिल वाला सड़क पर गिरा पड़ा था और उसके मुँह से ख़ून के बुलबुले निकल रहे थे। कुछ लोगों ने उसके इर्द गिर्द तीन-चार ईंटें रख दी थीं। ताकि ट्रैफिक थोड़ा हट कर निकल सके। कोई भी उसे उठा कर अस्पताल तक पहुँचाने की जिम्मेवारी पूरी नहीं कर रहा था। बस आगे निकल गई। मूड खराब था। अचानक पीछे बैठी लड़कियों में से एक ने कहा 'लगता है बचेगा नहीं'। दूसरी बोली 'बचे न बचे, वो तेरा क्या लगता है'। तू अपनी कहानी शुरू कर', और फिल्मी कहानी फिर से शुरू हो गई।

मन में अचानक पंक्तियाँ कौंधीं

'ये कैसी तौहीन-ए-हस्ती है,
ये कैसी बस्ती है,
मौत को लोग देते हैं कंधा,
जिंदगी रहम को तरसती है।

मुख्य प्रबंधक व संपादक

पी एस बी स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (मोगा) द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम

पीएसबी ग्रामीण स्व रोज़गार प्रशिक्षण संस्थान (आरसेटी) मोगा द्वारा 8 जनवरी, 2015 से 22 जनवरी, 2015 तक 'सॉफ्ट खिलौने बनाने' संबंधी कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कोकड़ी कलॉं, कोकड़ी हेरां, कोकड़ी फुला सिंह, तथा डुणेके आदि गाँवों के बेरोज़गारों ने सहभागिता की। अंत में संस्थान के नए निदेशक श्री नरिंदर सिंह भल्ला द्वारा सभी सहभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। इस अवसर की गरिमा बढ़ाने के लिए संस्थान के पूर्व-निदेशक श्री रणजीत सिंह वालिया भी उपस्थित थे।

गतिविधियाँ

आंचलिक कार्यालय, फरीदकोट में दिनांक 20.02.2015 को आंचलिक कार्यालय तथा शाखाओं से सेवानिवृत्त स्टॉफ सदस्यों हेतु पुनर्मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया।

ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, फरीदकोट में प्रशिक्षण प्राप्त प्रशिक्षणार्थियों के साथ मध्य में श्री वीरेन्द्रजीत सिंह विर्क, आंचलिक प्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, फरीदकोट।

जिला फरीदकोट में शाखा चाँद बाजा का उद्घाटन करते हुए आंचलिक प्रबंधक, श्री वीरेन्द्रजीत सिंह विर्क।

वृद्धावस्था

हिना

वृद्धावस्था या बुढ़ापा जीवन की उस अवस्था को कहते हैं जिसमें उम्र मानव जीवन की औसत आयु के समीप या उससे अधिक हो जाती है। वृद्ध लोगों को रोग लगने की अधिक संभावना होती है। उनकी समस्याएं भी अलग होती हैं। वृद्धावस्था धीरे-धीरे आने वाली एक अवस्था है जो कि स्वाभाविक व प्राकृतिक घटना है। वृद्ध का शाब्दिक अर्थ है - बढ़ा हुआ, पका हुआ, परिपक्व। वृद्धों के अनुभवों को आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त कर आदमी कहाँ से कहाँ पहुंच सकता है।

कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो वृद्धावस्था को प्राप्त नहीं करता है। इस धरा पर प्रत्येक व्यक्ति अपरिहार्य रूप से प्रकृति द्वारा निर्धारित जीवन चक्र में से गुजरता है जो उसे बचपन, किशोरावस्था, वयस्कता तथा प्रौढ़ावस्था के भिन्न-भिन्न चरणों में ले जाता है। प्रत्येक चरण का एक विशिष्ट जोश या उत्साह होता है, उसके साथ उत्तरदायित्व जुड़े रहते हैं तथा उस चरण विशेष की विशिष्ट समस्याएं भी होती हैं। आमतौर पर, आयु के बढ़ने के साथ, सम्पूर्ण परिदृश्य में आमूल चूल परिवर्तन होता है। उत्तरदायित्व अगली पीढ़ी को सौंप दिए जाते हैं तथा धीरे-धीरे जोश कम होता जाता है और उसके स्थान पर नीरसता और उकताहट का जन्म होता है जिसके परिणामस्वरूप अनेक जटिल समस्याओं का जन्म होता है जिनके कारण प्रभाविता में रुकावट पैदा हो जाती है। इन्हीं समस्याओं के कारण किसी भी व्यक्ति के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। आयु के बढ़ने के साथ आने वाली सामान्य स्वास्थ्य समस्याओं के साथ-साथ यह सभी समस्याएं एक अपरिवर्तन शील स्टैंप साबित होती हैं। इस समय आवश्यकता इस बात की होती है कि अपनी आशा को बनाए रखा जाए तथा अपनी जिंदगी को नए उत्साह तथा नवीन अनुभवों के साथ जागृत किया जाए। आपको अपने आहार में कोई अधिक कमी भी नहीं करनी होगा-आपको पौष्टिकता की अधिकतम मात्रा की प्राप्ति के साथ पूर्ण संतुष्टि भी प्राप्त होगी। एक अच्छी नींद आपके लिए वह सुखद परिणाम दे सकती है जो कि किसी दवा से प्राप्त नहीं होगी। इस तथ्य के पीछे वैज्ञानिक आधार है कि जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है हमारी नींद कम होती चली जाती है तथा हमारी नींद की गुणवत्ता में भी गिरावट आती है। यदि आप अकेले रहते हैं, तो आपको अनेक शारीरिक समस्याओं से ग्रसित होने की संभावना होती है, जो कि परिवार के अन्य सदस्यों को नहीं होती है। अकेलापन और एकाकीपन इसका केवल एक हिस्सा ही है। अपने पड़ोसियों को जानने का प्रयास करें और हमेशा सुरक्षा प्रणाली को सक्रिय रखें। यदि आपात कालीन सम्पर्क नम्बरों को सुलभ रूप से रखा जाता है तो यह बहुत अधिक लाभप्रद हो सकते हैं। कमजोर हड्डियाँ, दांत संबंधी रोग, नज़र, श्रवण तथा पैरों के रोग, रक्त दाब तथा कब्ज, उम्र के साथ होने वाली सामान्य समस्याएँ हैं तथा जिनसे व्यायाम आदि करने से बचा जा सकता है। आप नियमित स्वास्थ्य जाँच तथा डॉक्टर के साथ सलाह मशविरा करते हुए अपने आप को जागरूक बनाए रखें। मानसिक स्वास्थ्य स्वस्थ होने का अर्थ केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ होने तक सीमित नहीं होता है। शारीरिक स्वास्थ्य भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना कि मानसिक स्वास्थ्य। इन दोनों में क्या अंतर है तथा उनके स्तर पर विचार करते समय किन-किन पैरामीटरों पर ध्यान दिया जाता है। उम्र के बढ़ने के साथ अवसाद एक मुख्य स्थान ले लेता है। अनजाने में अधिकांश व्यक्ति इसकी खतरनाक पकड़ में फंस जाते हैं, और कभी-कभी तो उन्हें इसके लक्षणों की भी जानकारी नहीं होती है। यदि आप भूख न लगने के साथ-साथ बैचेनी, चिड़चिड़ापन तथा अधिक अपराध बोध तथा नगण्यता के विचारों का अनुभव करते हैं - तो निःसंदेह आप गंभीर मानसिक परेशानियों का सामना कर रहे हैं। इसका एकमात्र हल यह है कि आप अपनी जिंदगी से उत्साह को दूर न होने दें और सजग तथा सक्रिय रहें।

इतिहास में इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि प्राचीन काल में वृद्धों की स्थिति अत्यंत उन्नत एवं सम्माननीय रही हैं। उनका समाज एवं परिवार में अलग वर्चस्व था। परिवार की समस्त बागडोर उनके हाथों हुआ करती थी। परिवार के सभी फैसले उनकी सलाह के आधार पर होते थे। उन्हीं की सत्ता एवं प्रभाव के कारण पहले संयुक्त परिवार

हुआ करते थे, वे परिवार के सदस्यों को एक धागे में बांधे रखते थे, परंतु भौतिकवादी युग में वृद्धों की समस्याओं का बढ़ना एवं समाज में उनकी उपयोगिता कम आंकने से और प्रकार की समस्याएं बढ़ती नजर आ रही है। बुढ़ापा जीवन का अंतिम पड़ाव है और इस पड़ाव में जीवन अशक्त हो जाता है। कार्य करने की क्षमता कमजोर हो जाती है। भरण-पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। यही निर्भरता वृद्धों की समस्याओं का मूल हैं। वे शारीरिक एवं आर्थिक दृष्टि से घुटन भरी जिंदगी जीने को विवश हो जाते है। चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित क्यों न हो, इस अवस्था में उनकी गाड़ी चरमराने लगती है, वह युवा पीढ़ी से तालमेल नहीं बैठा पाते हैं, जिससे उनकी समस्याओं में वृद्धि हो जाती है। विश्व में समाज का बहुत बड़ा हिस्सा ऐसा है कि जहां वृद्ध, सामाजिक एवं आर्थिक असुरक्षा के कारण कष्ट झेलते हैं। युवा वर्ग वृद्धों को कोई महत्व नहीं देता हैं।

वृद्धावस्था को सुखद बनाने के उपाय

आज समाज के बदलते हुए मापदंडों ने यह अवस्था शापित सी कर दी है, फिर भी हम अपनी समझ से इस अवस्था में होने वाले तनावों से छुटकारा पा सकते हैं व जीवन के अंतिम चरण को सुखपूर्वक व्यतीत कर सकते हैं।

वृद्धों के अपना आहार तथा विहार ऋतु के अनुकूल एवं अपनी अवस्था के अनुसार रखना चाहिए। हो सके तो अंकुरित अनाज, दालों व उबली सब्जियों का अधिक सेवन करें।

- घी-तेल का प्रयोग कम से कम करें।
- धूम्रपान, मदिरापान वृद्धावस्था में नहीं करना चाहिए।
- मानसिक तनाव से बचना चाहिए।
- इस अवस्था में मान-सम्मान की आकांक्षा बढ़ जाती है। अतः घरवालों को चाहिए कि वृद्धों को उचित सम्मान दें।
- खाली बैठना अभिशाप है, अपनी रुचि के अनुसार अपना वक्त गुज़ारें।
- खाली समय भगवान का नाम जपें या कोई धार्मिक ग्रंथ पढ़ें।
- बच्चों के साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करें।
- सामर्थ्य के अनुसार ही कार्यों का प्रतिपादन करें।
- अपने पुराने मित्रों से मिलें व पत्र व्यवहार करें।
- ऐसे व्यक्तियों से मिलें जिनकी सोच ताजी हो।
- निराशावादी दृष्टिकोण त्याग दें, आशावादी बनें।
- ज्यादा से ज्यादा समय प्रकृति के साथ बिताएं।
- गरम व तरल पदार्थ अधिक लें।

- आंचलिक कार्यालय, जालंधर

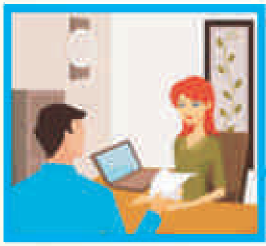

महिलाए एवं बैंक

कामेश सेठी

आज के आँकडों को यदि ध्यान से देखा जाए तो अब जो बैंक में नयी भर्तियाँ हो रही है उसमें महिलाओं का प्रतिशत पहले की अपेक्षा बहुत अधिक है। पहले बैंकों में 5 से 10 प्रतिशत तक ही महिलाओं का चुनाव हो पाता था लेकिन अब तो 40 से 50 प्रतिशत महिलाएँ आ रही है इन आँकड़ों से लगता है कि महिलाएँ अधिक से अधिक संख्या में बैंकों में आना चाहती है और पुरूषों का अन्य विकल्प होने की वजह से बैंकों की ओर आकर्षण कम होता जा रहा है।

महिलाओं का बैंकों में अधिक संख्या में आना निम्न बातों की ओर संकेत देता है:

1. हमारा देश तेजी से विकास कर रहा है क्योंकि जिस देश की महिलाएँ जितनी अधिक कामकाजी होती हैं उस देश का विकास भी उतना अधिक होता है।
2. महिलाएँ बैंक को सुरक्षित स्थान मानती हैं।
3. महिलाएँ बैंकों के कार्य को अपनी कार्य क्षमता के अनुरूप पाती हैं।
4. महिलाओं के पास कार्य के विकल्प पुरूषों की अपेक्षा कम होते हैं जैसें कि महिलाएँ सेना, पुलिस, मर्चेंट नेवी, इत्यादि क्षेत्रों में कार्य नहीं कर पाती है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या महिलाओं का इतनी अधिक मात्रा में बैंकों में आना बैंकिंग उद्योग के लिए सही है?आइए विश्लेषण करते हैं :-

पक्ष :

1. महिलाएँ बैंकिंग क्षेत्र में पुरूषों की अपेक्षा ज्यादा सफल हो सकती हैं। कारण है कि महिलाएँ अधिक सहनशक्ति के साथ अच्छी ग्राहक सेवा दे सकती हैं।
2. महिलाएँ ट्रेड यूनियन में गंभीरता से शामिल नहीं होती हैं।
3. महिलाएँ भ्रष्टाचार में पुरूषों की अपेक्षा कम लिप्त पायी गई हैं।
4. महिलाओं का कार्य करना एक परिवार के लिए अतिरिक्त आय का स्रोत होता है इसलिए महिलाएँ कम तनख्वाह में कार्य करने में राजी हो सकती हैं। जिससे कि बैंकिंग व्यवसाय में महिलाओं के कारण खर्चों में कमी आ सकती है।

विपक्ष :

1. हमारे देश में लगभग 20 प्रतिशत शाखाएँ ग्रामीण क्षेत्रो में हैं, महिलाओं का ग्रामीण क्षेत्र में जाकर कार्य करना कष्टदायक एवं कठिन है। कई शाखाएँ जोखिम भरे इलाकों में होती हैं। जहाँ महिलाएँ कार्य नहीं कर सकती हैं।
2. महिलाओं को आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित नहीं किया जा सकता है।
3. आज कल बैंकों में देर रात तक कार्य एक आम बात हो गई है और महिलाओं से देर रात तक कार्य नहीं लिया जा सकता है।

इससे पहले कि सपने सच हों, सपनों को देखना होगा।

4. महिलाओं के लिए विशेष अवकाश का प्रावधान है जैसा कि गर्भपात एवं प्रसव से पहले एवं बाद में महीनों का अवकाश जिससे शाखाओं का कार्य प्रभावित हो सकता है।

5. बैंकिंग व्यवसाय आर्थिक जोखिम से भरा हुआ है और महिलाएं पुरूषों की अपेक्षा आर्थिक जोखिम लेने में पीछे हैं।

निष्कर्ष :

उपरोक्त विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि महिलाओं का अधिक संख्या में बैंकिंग व्यवसाय में आना देश एवं बैंकिंग व्यवसाय के हित में शायद नहीं होगा। सबसे बड़ी समस्या जो आ रही है वह ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के स्थानान्तरण या तबादले की है। यदि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को न भेजा जाय तो ग्रामीण क्षेत्रों में केवल पुरूष ही रह पायेंगे और पुरूष बैंकिंग व्यवसाय में आने से कतराने लगेंगे। जब तक ग्रामीण क्षेत्रों में शाखाएँ नहीं खुलेगी तब तक देश का विकास नहीं हो सकता है। इसलिए इन क्षेत्रों में शाखाएँ खोलना भी अनिवार्य है। वास्तव में जितनी आसानी से एक पुरूष कर्मचारी या अधिकारी का स्थानान्तरण किया जा सकता है उतनी आसानी से महिलाओं का स्थानान्तरण संभव नहीं हो पाता है। महिलाओं के स्थानान्तरण के समय कई बातों को ध्यान में रखा जाता है। लेकिन यदि सभी महिला कर्मचारी/अधिकारी होगी तो फिर कहाँ तक उनकी सुविधाओं को ध्यान में रखा जा सकेगा?

प्रश्न यह उठता है कि क्या महिलाओं की भर्ती बैंकों में न हो?

उत्तर है नहीं, महिलाओं की बैंकिंग क्षेत्र में भर्ती अति आवश्यक है लेकिन पुरुष और महिलाओं के अनुपात को अवश्य ध्यान में रख कर ही महिलाओं की नियुक्ति होनी चाहिए अन्यथा बैंकों को ऐसी समस्याओं का सामना कर पड़ सकता है जो कि वर्तमान में दृष्टिगोचर नहीं हैं।

- शाखा साकची, जमशेदपुर

••••

पाठकों से निवेदन

बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन हेतु 'पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर' पत्रिका का विगत दो दशकों से सफल प्रकाशन किया जा रहा है। इस प्रकाशन में राजभाषा हिंदी के साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, बैंकिंग, कंप्यूटर एवं मानव-संसाधन से जुड़े लेखों के प्रकाशन के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य, कविता, ग़ज़ल का प्रकाशन किया जाता है। स्टाफ-सदस्यों के बच्चों को प्रेरित करने के लिए उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ, स्कैच, पेंटिंग को भी यथोचित स्थान प्रदान किया जाता है। इसे बहु-आयामी, प्रेरक और प्रोत्साहन माध्यम बनाने के लिए सभी का सहयोग एवं मार्गदर्शन अपेक्षित है। राजभाषा विभाग में आपके मूल लेख, कविता, सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं।

मुख्य संपादक

पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर

पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्र.का. राजभाषा विभाग

21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110008

ग्राहक एवं व्यवहार

रविन्द्र परमार

बैंकिंग व्यवसाय जिसमें विभिन्न प्रकार की सेवाओं के माध्यम से व्यवसाय करके लाभ अर्जन किया जाता है। व्यवसाय किसी व्यक्ति के साथ किया गया व्यवहार है जिसमें अर्थ का समावेश होता है संक्षेप में जिसे आर्थिक व्यवहार कहा जा सकता है। व्यवहार व्यक्तियों से होता है जिन्हें हम ग्राहक कहते हैं। ग्राहक एक मनुष्य है जिसे सम्मान व प्यार की अपेक्षा होती है। सम्मान की लड़ाई लड़ने और उसे जीतने के लिए वह अपना पूरा सामर्थ्य व शक्ति लगा देता है। इसी तरह थोड़ा सा प्यार व सम्मान मिलने पर ग्राहक भावनात्मक रूप से एक रिश्ते में बँध जाता है और मानव (ग्राहक) के इसी स्वभाव का लाभ लेते हुए हम उनसे मधुर संबंध स्थापित कर सकते हैं जो बैंकिंग व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने में सहायक की भूमिका निभाते हैं। हम अपनी ग्राहक सेवा जो कि हमारा मुख्य उद्देश्य है, को प्राप्त करने के लिए केवल अपने व्यवहार के माध्यम से बड़ी ही आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आज के प्रतिस्पर्धापूर्ण वातावरण में जहाँ ग्राहक के पास समय की कमी है केवल कुछ मीठे शब्दों को मुस्कुराहट के साथ परोसने पर एक मधुर रिश्ते एवं वातावरण का अहसास ग्राहकों को भविष्य में बनाए रखने में जोड़ का कार्य करता है। साथ ही हमें व्यवसाय व व्यक्तिगत स्तर पर मानसिक शांति प्रदान करता है। कड़वे वचन न केवल ग्राहक को दूर करते हैं अपितु हमारे व्यक्तित्व पर भी प्रभाव डालते हैं। जो कि बैंकर के केरियर को असफलता एवं पतन की ओर अग्रसर करते हैं। मधुर संवाद विवादों को खत्म या कम करने में औषधि का काम करते हैं। ग्राहकों को संगठन (व्यवसाय) से जोड़कर रखने और शिकायत रहित व्यवहार करने के लिए उनके साथ आत्मीय संबंध बनाना चाय में चीनी जैसी मिठास का कार्य करता है।

गहरा जुड़ाव व मित्रवत व्यवहार करने से ग्राहक छोटी-छोटी समस्याओं को नजर अंदाज कर जाता है तथा बड़ी चूक की स्थिति में संबंध को कमजोर नहीं होने देता है। अच्छा व्यवहार प्रतिस्पर्धी बैंकों द्वारा ग्राहकों को दिए जाने वाले प्रलोभनों के प्रभाव को कम करके संस्था द्वारा दी जा रही कम सुविधाओं को स्वीकार करने में सहायक होता है।

मित्रवत व्यवहार ग्राहकों को बातचीत के माध्यम से सेवाओं के बारे में बेहतर सुझाव प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ग्राहक, जिसे अंग्रेज़ी भाषा में कस्टमर कहा जाता है अर्थात् यह न हो तो संस्था का कोई अस्तित्व ही नहीं होगा। एक अध्ययन में यह पाया गया कि लगभग 70 प्रतिशत व्यक्तियों ने सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों से नये निजी बैंकों में खाता खुलवाने या स्थानातरंण का कारण कर्मचारियों का खराब व्यवहार, निम्न सेवा गुणवत्ता, असहयोगपूर्ण रुख, कार्य के कम घंटे आदि थे। ग्राहक अच्छे व्यवहार की अपेक्षा के साथ संगठन/संस्था से जुड़ते हैं जिनसे वह उचित सम्मान की अपेक्षा रखते हैं। ग्राहक का व्यवहार संस्था की छवि बनाने में भी कारगर होता है जो अन्य ग्राहकों को आकर्षित करने में सहायक होती है। वर्तमान वाणिज्य एवं व्यवसाय संबंध-विपणन का माना जाता है जिसमें ग्राहक के साथ निरंतर स्थायी व विश्वसनीय भावपूर्ण संबंध रखे जाने चाहिएं अन्यथा खराब व्यवहार ग्राहक के पलायन को प्रारंभ करता है। अतः व्यवसाय में व्यवहार की मधुरता के स्तर को उच्च रखना सफलता की कुँजी के रूप में कार्य करता है। जिसका अंतिम परिणाम संस्था की प्रगति के रूप में संस्था के कर्मचारियों/अधिकारियों की उन्नति के रूप में परिणीत होता है।

- प्रधान कार्यालय, अग्रिम विभाग

• • • •

ईमानदार व्यक्ति ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है।

पवित्र नगरी, फरीदकोट में बैंक के

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

श्री जतिंदरबीर सिंह (आई.ए.एस.)

का

हार्दिक स्वागत

बैंक की विभिन्न खुदरा ऋण योजनाए

- आवास ऋण योजना
- पीएसबी ऑटो ऋण योजना
- देश तथा विदेश में उच्च शिक्षा के लिए शिक्षा ऋण योजना
- संपत्ति पर ऋण योजना
- डॉक्टरों के लिए विशेष ऋण योजना
- पंजाब एण्ड सिंध उपभोक्ता ऋण कंप्यूटर ऋण योजना
- पी एण्ड एस बैंक वाणिज्यिक वाहन योजना
- आवास ऋण योजना के अंतर्गत लचीला ओवरड्राफ्ट योजना
- पंजाब एण्ड सिंध बैंक स्वर्ण ऋण योजना
- वेतन तथा पेंशन प्राप्त करने वालों के लिए व्यक्तिगत ऋण योजना
- कॉर्पोरेट वेतन खातों में बचत ओवरड्राफ्ट
- वरिष्ठ नागरिकों के लिए सुखमयी योजना
- पीएसबी उत्कृष्ट - प्रीमियम संस्थाओं (आई.आई.एम. आई.आई.टी. तथा आई.एस.बी. (हैदराबाद) के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण ऋण योजना
- शिक्षण तथा प्रशिक्षण के लिए मॉडल ऋण योजना
- पीएसबी फैमिली बांडिग योजना
- पीएसबी ''वृद्धि और भुगतान'' आवास ऋण योजना

किसी भी योजना के अंतर्गत ऋण प्राप्त करने हेतु नज़दीकी शाखा में पधारें।